लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पैतीसवां अंक जनवरी–मार्च, 2021

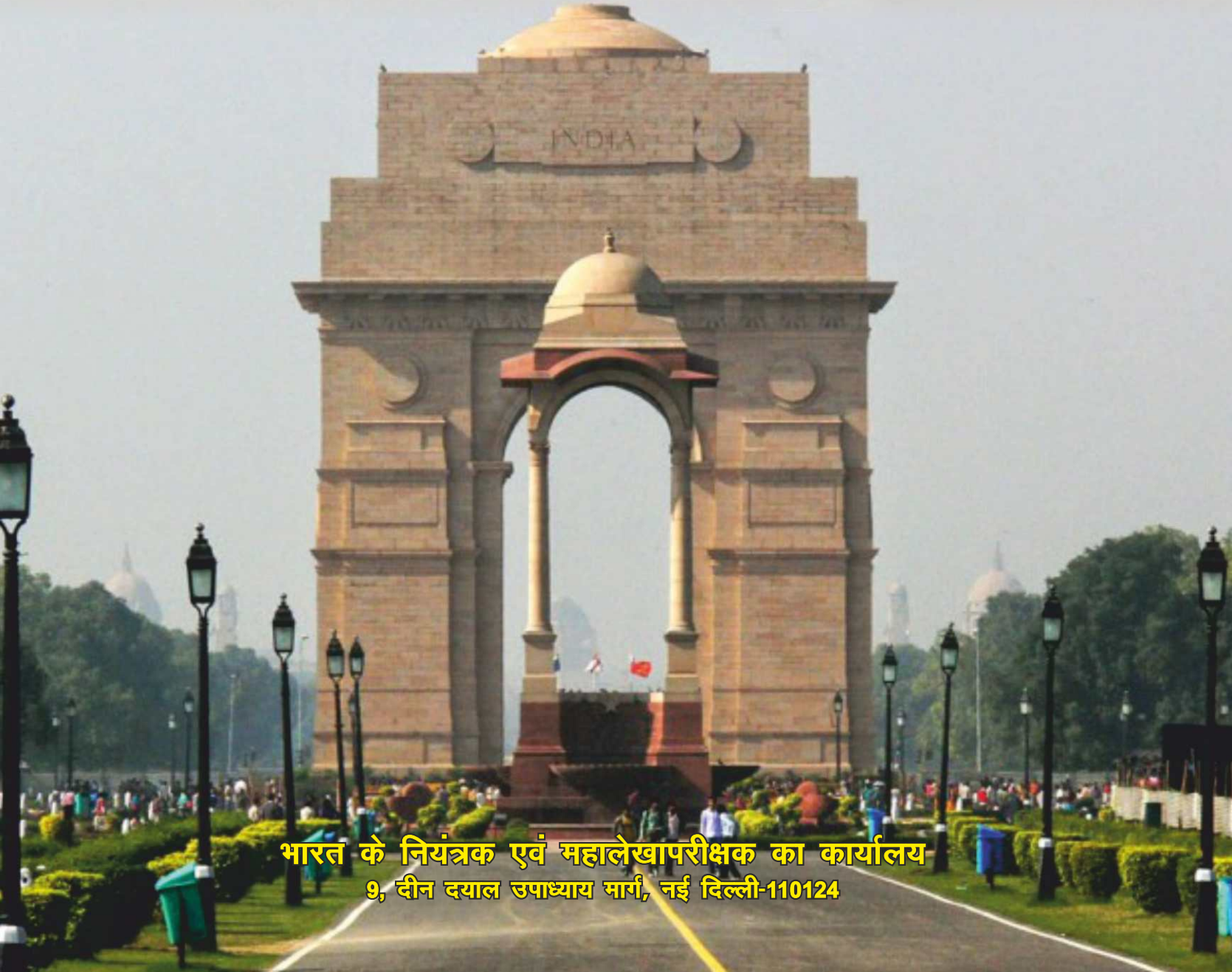

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124

बाल उद्यान
का उद्घाटन
श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
के कर कमलों द्वारा
दिनांक 11 फरवरी 2021 को सम्पन्न हुआ
Inauguration
CHILDREN PARK
by
SHRI GIRISH CHANDRA MURMU
COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
On
11 February 2021

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पैंतीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका

(जनवरी–मार्च, 2021)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पैतीसवां अंक (जनवरी–मार्च, 2021)

	पृ॰सं॰
अनुक्रमणिका	3
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
पाठकों के नाम पाती	6
आपके पत्र	7

लेख

1.	राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका *सुश्री सं.ग. श्रीमती*	11
2.	कोविड–19 के पश्चात – भारत के पुनर्निर्माण पर सुझाव *यशवंत कुमार चौरसिया*	13
3.	रूप–विज्ञान *गौरव हारित*	15
4.	मानव जीवन के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान *सुश्री राजकुमारी शर्मा*	18
5.	भारत में महिला सशक्तिकरण *सुश्री मीना भारद्वाज*	22
6.	युवाओं की महत्ता *नरेन्द्र कुमार पाण्डेय*	26
7.	कबीर वाणी : समरसता और दर्शन का प्रतीक *अभय राम सिंह*	29
8.	बहुआयामी पर्व मकर संक्रांति *मदन गोपाल शर्मा*	32
9.	अभिव्यक्ति की आजादी *प्रीतम चौहान*	34
10.	हरी सब्जी *आलोक कुमार 'अलक'*	35

कहानियाँ

11.	पुत्र की वेदना *रामौतार प्रसाद*	39

विषय सूची

	पृ.सं.
12. राजा का तर्कसंगत निर्णय *उदय शंकर दुबे*	41
13. माँ तुझे सलाम *सुश्री लिपिका दास*	43
14. दर्द का रिश्ता *कुमार शर्मा 'अनिल'*	45
कविताएँ	
15. दुआएँ रंग लाएँगी *श्रीमती शुभा कुमार*	47
16. श्रीनगर... *सुश्री इला सिंह*	48
17. धुआं *सुश्री रश्मि अग्रवाल*	49
18. 'आज' कल के लिए *सुश्री रूपा राशि*	50
19. नया विहान *सुश्री सुमेधा अमर*	51
20. कोविड–19 की यादें *सुश्री प्रिया मिश्रा*	52
21. दो कविताएं *सुश्री लीना दरियाल सत्यम*	53
22. मृत्यु के करीब *करूणाकर साहू*	54
23. उंगली पकड़कर पहुंचा पकड़ना *मेहरबान सिंह नेगी*	55
24. नारी की महिमा *दया सागर*	58
25. ग़ज़ल *सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'*	59
26. मेरी बूढ़ी नानी *सुश्री नीतू सिंह*	60
27. मैं माँ को मानता हूँ *अनिल कुमार पिलानी*	61
28. कन्या भ्रूण हत्या *सुश्री आस्था गुप्ता*	62
29. ग़ज़ल *राम सिंगार चौहान*	63
30. स्मृति–वितान *केदार नाथ प्रसाद*	64

स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ पैतीसवां अंक
(जनवरी–मार्च, 2021)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

श्री सुश्री नमिता सेखों
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री राज कुमार
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अजीत सिंह
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

सुश्री अनामिका अंतिल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

रचना चयन समिति

श्री सुनील कुमार डबराल
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री राजकुमारी शर्मा
सलाहकार

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
जी–194, सैक्टर–2, बवाना, नई दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट– पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

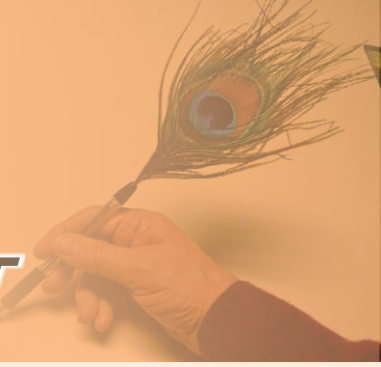

संपादकीय

लेखापरीक्षा–प्रकाश पत्रिका एक सौ पैतीसवां अंक (जनवरी–मार्च, 2021) आपके हाथ में है। आपका आभारी हूँ जो आप अपनी अमूल्य धरोहर रचनाएं भेजकर इस संकल्प् को पूरा करने में हमारा सहयोग कर रहे हैं। मैं तहे दिल से आपकी उस यशस्वी लेखनी की दीर्घायु की कामना करता हूँ जिसके शब्द संसार ने हमें भाषाई आजादी देने की शपथ ली हुई है तथा सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वायन को सम्बल प्रदान कर रही है। आपकी लेखनी और पाठकों का सहयोग ही पत्रिका की सफलता व आपका यश है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत ने सूचना के अधिकार को संवैधानिक मान्यता देकर जिम्मेदारी लेने की परिपाटी कायम की है। पारदर्शिता व जिम्मेदारी किसी भी लोकतंत्र के लिए परम आवश्यक है। कहने का तात्पर्य यही है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने व उस पर खरा उतरने के लिए कृत संकल्प है तथा इसमें राजभाषा की अहम भूमिका है। इसलिए यह परम आवश्यक हो गया है कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को तीव्रगति प्रदान की जाए ताकि लोकतंत्र और भी सुदृढ़ हो सके।

मुख्यालय के पत्रिका परिवार का सदैव यह प्रयास रहा है कि पाठकों की पठन–पाठन व लेखन में रूचि बनी रहे। प्रशासनिक, लेखापरीक्षण, लेखांकन, तकनीकी, राजभाषा कार्यान्वयन, समसामयिक व राष्ट्रीय महत्व के विषयों के अतिरिक्त पाठकों के पूर्ण मनोरंजन के लिए भी रचनाएं सम्मिलित की जाती रही हैं। इससे जुड़े नागरिकों/कार्मिकों की आशाएं बलवती हों इसके लिए हमारी पूरी कोशिश रहती है कि हमारे पाठकों व रचनाकारों का मनोबल हमेशा ऊंचा रहे।

हम सभी शपथ लें कि हिंदी में सब कार्य करेंगे, जिससे हमारी अपनी संस्कृति और देश का सम्मान पूरे विश्व में प्रतिष्ठित हो सके।

लेखापरीक्षा प्रकाश के सभी रचनाकारों, पाठकों और उन महानुभावों, जिनके दिशानिर्देश व सुझावों से पत्रिका की छटा उत्तरोत्तर निखरती रही है, को पत्रिका–परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्दी – जय भारती

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह
संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम पाती

परमश्रद्धेय महानुभाव,

राजभाषा हिन्दी के अकिंचन सेवक की ओर से सादर जय हिन्द और जय हिन्दी। आपकी, हमारी और हम सबकी ये गौरवमयी अभिव्यक्ति अपनी सुखद यात्रा के एक सौ पैतीसवें पड़ाव पर सकुशल पहुंच रही है। निर्विघ्न यात्रा के लिए सभी समान रूप से बधाई के पात्र हैं। मां भारती, हमारी इस पात्रता को हमेशा बरकरार रखे।

आज मैं उन पाठकों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जो व्यस्तता के कारण या अपनी लेखन कला के प्रति अभिरूचि जाग्रत न होने के कारण रचनाओं को प्रेषित नहीं कर पा रहे हैं लेकिन पत्रिका को नियमित रूप से पढ़ते हैं तथा साथ ही अच्छी रचनाओं को सराहते हैं, उनका सम्मान करते हैं और पत्र व्यवहार से अपने विचार व अभिव्यक्तियां प्रकट करते हैं।

इसी के अनुरूप देश को गौरवान्वित करने के लिए हमने अपनी भाषा हिन्दी को स्वच्छ वातावरण में पिरोकर ऊँची उड़ान भरने के लिए पत्रिका को माध्यम बनाया है, जिससे हिन्दी को एक नई दिशा प्रदान की जा सके। अंत में मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के माध्यम से आप सभी पाठकगण इसी उत्साह के साथ हिन्दी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहें ताकि राष्ट्रभाषा हिन्दी अपने प्रगति–पथ पर निरंतर आगे बढ़ती रहे और साथ ही पत्रिका नये–नये शिखर छुए।

जय भारत, जय भारती

आपका शुभेच्छु
अजीत सिंह
संपादक

नई दिल्ली

आपके पत्र

पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत–बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी एक रचना की प्रशंसा करना, पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाओं का अपमान करना होगा, क्योंकि पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका का मुद्रण सर्वोत्तम कोटि का है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.अ.)
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.)–II
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका चिरकाल तक अपने विकास पथ पर अनवरत अग्रसर रहे

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका अत्यंत आकर्षक है एवं इसमें सभी लेख अपने आप में एक अलग एवं अद्वितीय विषयवस्तु को समाहित करते हुए अपने शीर्षक को सर्वोचित सार्थकता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के प्रसार हेतु लक्षित उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है 'लेखापरीक्षा प्रकाश' पत्रिका चिरकाल तक अपने विकास पथ पर अनवरत अग्रसर रहे, यही हमारी कामना है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु पुनः हमारी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

हमारी राजभाषा हिंदी के समान ही रचनाओं का यह संकलन विविधता में एकता लिए हुए है जिससे पाठक रचनाएं पढ़ने से अपने आप को रोक नहीं पाता

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं प्रशंसनीय रचनाओं से परिपूर्ण है। हमारी राजभाषा हिंदी के समान ही, रचनाओं का यह संकलन विविधता में एकता लिए हुए है जिससे पाठक रचनाएं पढ़ने से अपने आप को रोक नहीं पाते हैं। कहानियां 'पोपट लाल बच्चन की अजीब दास्तान' एवं 'मटर–कचौरी' रोचक हैं, कविताएं 'कान की व्यथा', 'भजन संध्या' एवं ज्ञानवर्धक लेख 'वाक्य – विज्ञान'

उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखाधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)-II
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरणादायक, सुपाठ्य, संग्रहणीय, उच्चकोटि की तथा ज्ञानप्रद हैं

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक के वेबसाइट पर उपलब्ध होने की सूचना प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरणादायक, सुपाठ्य, संग्रहणीय, उच्चकोटि की तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्री जुगल किशोर का लेख 'कोरोना काल', श्री योगेश कुमार मिश्र की कहानी 'दीदी', श्री गौरव हारिथ का आलेख 'वाक्य–विज्ञान', सुश्री दया हीत की कहानी 'नासूर', सुश्री रश्मि सानन की कविता 'माँ', श्री एस.सी. मित्तल का लेख 'निर्बल के बल राम', श्री कमल कुमार की कविता 'मैं (स्वार्थ)', श्री बी.एस. चौहान द्वारा रचित 'हार्ट अटैक', सुश्री सं.ग. श्रीमती का लेख 'क्या बुढ़ापा अभिशाप है?' आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय, कोलकाता

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की ई–पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज–सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की ई–पत्रिका के रूप में अग्रेषित करने हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। विशेषकर श्री गौरव हारिथ कृत 'वाक्य विज्ञान' अत्यंत ज्ञानवर्धक है, श्री एस.सी. मित्तल कृत 'निर्बल के बल राम' अत्यंत मर्मस्पर्शी है, श्री बिजेन्द्र कुमार कृत 'वाकई, जिन्दगी तो बचपन की ही अच्छी होती है' बचपन की यादें वापस लाता है एवं श्री आशुतोष सिंह कृत 'पशु और मनुष्य' यथार्थता को स्पष्ट करने वाला है। समग्र रूप से पत्रिका अत्यंत प्रभावी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाईयाँ एवं शुभकामनाएं।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय, चेन्नै

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण, पठनीय एवं सराहनीय हैं

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की ई–पत्रिका हमें प्राप्ति हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण, पठनीय एवं सराहनीय हैं। श्री योगेश कुमार मिश्र द्वारा लिखित 'दीदी', सुश्री आरती शर्मा की 'भारत–पाक युद्ध 1965 के महानायक – अब्दुल हमीद' तथा श्री जुगल किशोर की 'कोरोना काल' उल्लेखनीय हैं। अन्य सभी रचनाएं भी उत्कृष्ट हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय, मुम्बई

लेखापरीक्षा प्रकाश के लेखकों की कलम अपने सभी पाठकगण को एक नई सोच व दिशा प्रदान करती रहेगी

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की प्रति ऑनलाईन के माध्यम से प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानी एवं कविताएं उच्चकोटि की हैं। इनमें से कुछ रचनाएं तो बहुत ही चिंतन योग्य हैं। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख 'क्या बुढ़ापा अभिशाप है?' सीख देती है कि हमें बड़े बुजुर्गों के अनुभवों एवं उनके ज्ञानकोष का जीवन में प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से बुढ़ापा अभिशाप नहीं अपितु वरदान बन जाएगा। 'वाकई, जिंदगी तो बचपन की ही अच्छी होती है' पाठकों को अतीत के सुनहरी यादों की ओर ले जाती है। श्री केदार नाथ प्रसाद द्वारा रचित कविता 'माँ' में वर्णित 'स्वर्ग की आभा, चांदनी की दूधिया, नेह का अमृत कलश, वेद की पवन ऋचा, तिमिर के बीच जलती एक उन्मन दीपिका', सूर्य की अरूणिम किरण', 'यज्ञ की समिधा' आदि शब्दों में माँ के देवीय रूप के साक्षात दर्शन मिलते हैं। लेखापरीक्षा प्रकाश के लेखकों की कलम अपने सभी पाठकगण को एक नई सोच व दिशा प्रदान करती रहेगी। 'गोमती परिवार की ओर से लेखापरीक्षा प्रकाश परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (एएमजी–प्रशा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
त्रिपुरा, अगरतला

यह अंक हिंदी कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रचार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ तैतीसवां अंक (ई–पत्रिका) प्राप्त हुआ, सहर्ष बधाई। पत्रिका का यह अंक हिंदी कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रचार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में समकालीन मुद्दों पर केंद्रित ज्ञानवर्धक आलेखों के साथ स्तरीय कविता, कहानी का समावेश किया गया है। रचनाएं रोचकता और पठनीयता से परिपूर्ण हैं। इस अंक की रचनाओं में 'कोरोना काल', 'पुष्टि मार्ग और सूरदास' (भक्ति आंदोलन पर केंद्रित आलेख), एवं 'हार्ट अटैक' कहानी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने हेतु 'लेखापरीक्षा प्रकाश' एक उत्कृष्ट और प्रभावी मंच है। पत्रिका भविष्य में और भी बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन पर पुनश्च बधाई।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

पत्रिका के उत्तम संयोजन हेतु संपादक मण्डल को बधाई।

त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ तैतीसवां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आंतरिक एवं बाह्य सौंदर्य तथा मुद्रण आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं विशेष रूप से सुश्री सं.ग. श्रीमती 'क्या बुढ़ापा अभिशाप है?', सुश्री आरती शर्मा की 'भारत–पाक युद्ध 1965 के महानायक – अब्दुल हमीद', सुश्री नीतू सिंह की 'वीरान सफर', श्री अनिल कुमार पिलानी की 'कान की व्यथा' एवं सुश्री मनजीत शर्मा की 'गजल' सराहनीय हैं। पत्रिका के उत्तम संयोजन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखाधिकारी (हि.प्र.)
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
उत्तराखण्ड, देहरादून

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक।

मुख्यालय से प्रकाशित ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री योगेश कुमार मिश्र का लेख 'दीदी', श्री कमल कुमार की रचना 'मैं (स्वार्थ)' तथा सुश्री रश्मि सानन की रचना 'माँ' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ तैतीसवां अंक (ई–पत्रिका) ई–मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण आकर्षक है साथ ही इसकी साज–सज्जा मुद्रण भी अति उत्तम है। सुश्री सं.ग. श्रीमती जी का लेख 'क्या बुढ़ापा अभिशाप है?', श्री बिजेन्द्र सिंह बेरवाल जी का लेख 'वाकई, जिंदगी तो बचपन की ही अच्छी होती है', एवं श्री यशपाल कालरा जी की कहानी 'मटर–कचौरी' अत्यंत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है। श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृ.शि. एवं कौ.वि.)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली

पत्रिका में वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' की एक सौ तैतीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। इस पत्रिका का मैंने अध्ययन किया, इसमें वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं।

डॉ. अमी याज्ञिक
सदस्य लोकसभा
7, मीना बाग, मौलाना आजाद रोड
नई दिल्ली

राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका

सुश्री सं.ग. श्रीमती
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड
एजीज लेआऊट
बेंगलूर

भारत विभिन्न भाषाओं और बोलियों का एक गुलदस्ता है। यदि हम भारतीय संस्कृति को करीब से देखें, तो हमें ग्रीक (यूनानी), फ़ारसी, हडप्पन, अरबी, आर्यन, द्रविड तथा नवीनतम मुग़ल और अंग्रेज़ी सभ्यताओं की झलक मिल जाएगी। भारत ने हमेशा नई संस्कृतियाँ तथा रीति–रिवाज़ों का स्वागत किया है और खुद को समृद्ध बनाया है।

1947 में, स्वतंत्रता के पश्चात् भारत एक सार्वभौमिक संपन्न राष्ट्र बन गया तथा भारतीय राष्ट्र के नेताओं ने एक सार्वभौमिक भाषा के साथ देश के सभी क्षेत्रों को एकजुट करने का अवसर पहचाना। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, 1950 में भारतीय संविधान तथा आधिकारिक भाषा अधिनियम ने देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की आधिकारिक भाषा घोषित कर दिया। भारत की एकता अर्थात् राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी की भूमिका उल्लेखनीय है। आईए, इसके बारे में हम विश्लेषण करें।

हिंदी, देश के कोटि–कोटि कंठों की पुकार तथा उनका हृदय हार है। हिंदी के सहारे, कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाकर अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं तथा संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदानता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिंदी में ही है।

हिंदी अपने उद्भव काल से ही विभिन्न प्रदेशों की संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होने लगी थी। मुग़ल शासकों के महलों में हिंदी ही बोलचाल की भाषा थी। अमीर खुसरो तुर्क थे, परन्तु लिखते थे फारसी और हिंदी में।

हिंदी अपने जन्म, प्रकृति से अपनी आन्तरिक शक्ति के सहारे, भारत की सार्वदेशिक भाषा के रूप में तथा सामासिक संस्कृति की वाहिका बनकर विकसित तथा समृद्ध हुई है। विद्वानों का मत है कि भारतीय जनमानस और जनसंस्कृति को सामासिक रूप में विकसित करने में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी अखिल भारतीय संस्कृति, साहित्य, दर्शन, धर्म आदि की अभिव्यक्ति ही नहीं, वह भारतीयता का प्रतीक भी बन गयी है।

राजस्थान की मीरा, महाराष्ट्र के नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता की वही भाषा है जो संतों की ब्रजभाषा है। छत्रपति शिवाजी, उनके पिता शाहजी सब ब्रजकाव्य के प्रेमी तथा संरक्षक थे। आज दक्षिण के चारों राज्यों

में हिंदी के जो सफल लेखन, पठन तथा अध्यापन हो रहा है, उसमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित "दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा" तथा "राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा" जैसी अनेक संस्थानों का अत्यधिक योगदान है। इसी तरह उड़ीसा, असम तथा मेघालय में भी हिंदी का व्यापक प्रचार, प्रसार परिलक्षित होता है।

हिंदी की लिपि शुद्ध वैज्ञानिक है तथा इसमें कोई दोहरी मानसिकता नहीं दिखती है। विश्व व्यवसाय का सबसे बड़ा बाज़ार हिंदी भाषी क्षेत्र है। अतः यह सार्वभौमिक भाषा बनने की निकट भविष्य में पूरी संभावनाएँ हैं। हमारी स्वतंत्रता के सात दशकों के बाद भी, देश में अपना स्थान खोजने के लिए संघर्ष करते हुए, देवनागरी लिपि में हिंदी उपेक्षा की स्थिति में है।

हिंदी, पूरे विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इस तरह वैश्विक स्तर पर, बड़ी संख्या में उपयोगकर्ताओं के होने के कारण अन्य देशों के लोग हिंदी सीखने में मज़बूर होंगे। व्यापार, शिक्षा आदि में भारत के साथ जुड़ने के लिए हिंदी सीखने की कोशिश करेंगे। हिंदी का उपयोग करके भारत की एकता तथा प्रगति को बनाए रखने के लिए यह उच्च समय है। हिंदी ने खुद को दुनिया की अन्य भाषाओं के बीच एक प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित किया है। हिंदी से प्यार करना, इसे बढ़ावा देना तथा हिंदी में संवाद करने से, भारत की एकता की वृद्धि होने में कोई संदेह नहीं है।

हिंदी भाषा तथा इसमें निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर सुदृढ़ तथा समृद्ध है। यह प्रेम, मिलन तथा सौहार्द की भाषा है। हिंदी, भारत को एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी को आसानी से बोल समझ लेता है। अतः, इसे सामान्य जनता की भाषा अर्थात् जनभाषा कहा गया है। हिंदी भारत की संपर्क भाषा तथा एक समृद्ध भाषा भी है। आदिकाल से अब तक हिंदी के आचार्यों, संतों, कवियों, विद्वानों, लेखकों तथा हिंदी प्रेमियों ने अपने विचारों, ग्रंथों, रचनाओं एवं लेखों से हिंदी को समृद्ध किया है।

आज देश में जितनी भी क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, उन सब की जननी हिंदी है। तथा हिंदी ने, वेदभाषा संस्कृत से जन्म लिया है। हिंदी के बिना हमारा देश हिंदुस्तान अधूरा है। देश की एकता तथा अखण्डता को बनाए रखने में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है। अतः हिंदी का प्रचार–प्रसार करना हर भारतीय का परम कर्तव्य है। शिक्षा क्षेत्र में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान तथा कार्यान्वयन होना चाहिए। आधुनिक हिंदी के निर्माता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की भाषा के संबंध में लिखी गई निम्नलिखित पंक्तियाँ आज के दिन, हमारे लिए एक अभूतपूर्व प्रेरणा का संदेश दे रही हैं।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न तन को मूल।"

आईए, हम सब मिलकर हिंदी के प्रचार–प्रसार कार्य में जुटे रहें तथा भारत की एकता को समृद्ध करें।

''यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

– लोकमान्य बाल गंगाधार तिलक

कोविड–19 के पश्चात् – भारत के पुनर्निर्माण पर सुझाव

यशवन्त कुमार चौरसिया
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उत्तर रेलवे, बड़ोदा हाऊस, नई दिल्ली

"कोविड एक बीमारी है अतः बीमारी से नफरत करें, बीमार व्यक्ति से नहीं"
– टेड्रोस अधानोम

प्रस्तावना – कोरोना जैसी विश्वव्यापक महामारी ने सबका बहुत ही नुकसान किया है, चीन के वुहान शहर से फैले इस वायरस ने यूरोप के इटली, ब्रिटेन जैसे देशों में हड़कंप मचा दिया है। इस वायरस से विश्वशक्ति अमेरिका भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। भारत में इस वायरस से बहुत ही आर्थिक नुकसान हुआ है। सकल घरेलू उत्पाद में काफी गिरावट दर्ज की गई, इसकी भरपाई सरकार कहीं से कर्ज लेकर ही करेगी।

प्रभाव – भारत में इसका प्रभाव पहली तिमाही 2020–21 में 23.9% की गिरावट या 3 लाख करोड़ रुपये की मंदी से ही नहीं आँका जा सकता। इस लॉकडाउन की वजह से सभी लोगों को घर में रहना पड़ा, जिससे मांग–पूर्ति अनुपात भी बहुत बढ़ा, सरकार के राहत पैकेज की वजह से सामाजिक/आर्थिक व्यवस्था कुछ हद तक ठीक रही। कामगारों के न होने अथवा उनके पलायन से अर्थव्यवस्था पर गहरी चोट पड़ी है।

भारत पुनर्निर्माण के लिए सुझाव –

1. **सतत आधारित संरचना** – वर्ष 2008–09 में आर्थिक मंदी के दौर में चीन व दक्षिण कोरिया जैसे देश में इससे निपटने के लिए हरित नीति का उपयोग किया था। इसके तहत उन्होंने सोलर छत, पवन ऊर्जा, बायोगैस जैसे उपक्रमों के तहत अपनी आधारित संरचना को मजबूत किया, यही कारण है कि उनके यहाँ अन्य देशों की तुलना में जल्द ही रिकवरी हुई। अतः भारत में भी इस मॉडल के संबंध में न केवल सरकारी कार्यालयों पर बल्कि ग्रामीण स्तर पर कार्यवाही करनी चाहिए।

2. **अनौपचारिक कामगारों को सुरक्षित माध्यमों से जोड़ना**– भारत जैसे देश में 90% कामगार अनौपचारिक हैं, वह काम तो करते हैं परन्तु उनकी गिनती रिकॉर्डस में नहीं है, क्योंकि यह अव्यवस्थित है। अतः भारत सरकार को उन्हें प्रोविडेंट फंड, राष्ट्रीय पेंशन योजना, स्वास्थ्य लाभ वाली योजनाओं से जोड़ना चाहिए। जिससे देश की अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर

लाने के लिए उनका योगदान हो सके। यही नहीं व्यक्तिगत स्तर पर वह भी अपने आप को सुरक्षित महसूस करें।

3. **प्रौद्योगिकी का उपयोग** – भारत में "घर से कार्य" करने का प्रचलन नहीं था। परन्तु कोरोना महामारी ने हमें सिखाया कि यह भी संभव है। इसी प्रकार गिग–इकॉनमी को भी बढ़ावा देना होगा जिससे स्वतंत्र वर्क के माध्यम से देश की तरक्की में अहम योगदान हो सके। ई–वाणिज्य कंपनियों को बढ़ावा देना होगा, परन्तु इन सबके साथ डाटा प्राइवेसी पर भी काम करना होगा।

4. **रोजगार योजना व कैश–सपोर्ट तंत्र का विकास** – जून 2020 में एक सरकारी आँकड़े के अनुसार 6 करोड़ 20 लाख लोगों ने रोजगार की मांग की। अतः जिस प्रकार राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना कार्य कर रही है, इसी प्रकार की योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए। बंद हो गई योजनाओं में जान फूँकने के लिए कैश–सपोर्ट सिस्टम का भी सहारा लिया जाना चाहिए।

5. **अन्य सुझाव** –

(i) लोगों में व्यवहारिक परिवर्तन (प्रौद्योगिकी को लेकर) आना चाहिए।

(ii) भारत में रोजगार नहीं बल्कि कुशल कामगारों की कमी है, इस पर कार्य करने की आवश्यकता है।

(iii) कार्बन उत्सर्जन स्तर में कमी लाने की आवश्यकता है।

(iv) हरित–नीति का पालन होना चाहिए।

निष्कर्ष –

भारत एक विकासशील देश है, यहाँ के लोगों की तरक्की तब होगी जब ग्रामीण भारत की तरक्की होगी, गाँधी जी ने पूर्ण स्वराज की कल्पना में 'आर्थिक पूर्ण स्वराज' के महत्व की बात की थी। भारत में प्रति व्यक्ति आय को आने वाले पाँच–दस सालों में बढ़ाने की सख्त जरूरत है, सरकार को यह लक्ष्य लेकर चलना चाहिए।

"दर्द से हमें विचलित नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें दर्द से परिष्कृत होकर और बेहतर बनना चाहिए।"

रूप–विज्ञान

गौरव हारिथ
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

शब्द किसी भाषा की लघुतम सार्थक स्वतंत्र इकाई को कहते हैं। इसमें संज्ञा (राम, लड़का), क्रिया (चल, गए), सर्वनाम (मैं, वह) आदि आते हैं। शब्द में संबंध तत्व आदि जोड़कर (राम ने) रूप या पद बनता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया वाक्य में शब्द रूप से नहीं वरन् रूप या पद के रूप में ही आते हैं। उदाहरण के लिए शब्द है – राम, रावण, बाण, मारा। इसे संबंध तत्व 'ने' को 'आ' से जोड़कर रूप या पद बनेंगे। राम ने, रावण को, बाण से, मारा और फिर इन्हें क्रम से रखकर वाक्य बनेगा – राम ने रावण को बाण से मारा।

रूप–विज्ञान में भाषा में प्रयुक्त रूपों (पदों) का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में रूप विज्ञान भाषा–विज्ञान की वह शाखा है जिनमें शब्द से रूप रचना करने का अध्ययन किया जाता है। इसे पद–विज्ञान भी कहते हैं। जैसे प्रोक्ति के भीतर वाक्य मिलते हैं उसी प्रकार वाक्य के भीतर पद या रूप मिलते हैं।

शब्द तथा पद में अंतर – भाषा की इकाई वाक्य है अर्थात् भाषा को वाक्यों में तोड़ा जा सकता है उसी प्रकार वाक्य के खण्ड शब्द होते हैं और शब्द की ध्वनियाँ। एक ध्वनि या एक से अधिक ध्वनियों से शब्द बनता है और एक शब्द या एक से अधिक शब्दों से वाक्य बनता है यहाँ प्रयुक्त 'शब्द' शब्द का सामान्य या शिथिल प्रयोग है। सामान्य शब्द और वाक्य में प्रयुक्त शब्द एक–दूसरे से भिन्न है। वाक्य में प्रयुक्त शब्द में कुछ ऐसा भी होता है जिसके आधार पर वह अन्य शब्दों से अपना संबंध दिखला सके या अपने को बाँध सके। लेकिन कोश में दिए गए शब्द में ऐसा कुछ नहीं होता दूसरी ओर यदि वाक्य में दिया गया शब्द एक–दूसरे से संबंध न दिखा सके तो वाक्य नहीं बन सकता। इसी प्रकार शब्द के दो रूप सामने आते हैं एक तो शुद्ध रूप या मूल रूप है जो कोश में मिलता है और दूसरा वह रूप है जो किसी प्रकार के संबंध तत्व से युक्त होता है। यह दूसरा वाक्य में प्रयोग के योग्य रूप दो पद या रूप कहलाता है। दूसरे शब्द का वाक्य में प्रयुक्त होने के योग्य बना लेने पर उसे पद की संज्ञा दी जाती है।

(i) उपरूप अथवा संरूप

कभी–कभी ऐसा देखा जाता है कि कई रूपिमों का अर्थ एक होता है उदाहरणार्थ अंग्रेज़ी में संज्ञा शब्दों को एकवचन से बहुवचन बनाने के

लिए 'स; कैट्स (Cats), हैट्स (Hats) 'ज़' आईज़ (Eyes) आदि का प्रयोग होता है। अर्थात् 'स' 'ज़' 'ईज़' 'रिन' बहुवचन वाले रूपिम है इनका अर्थ एक ही है। जिन दो या दो अधिक रूपिमों का अर्थ एक ही होता है उन्हें संदिग्ध समूह या संदिग्ध युग्म कहते हैं लेकिन केवल संदिग्ध युग्म होने के आधार पर ही उन्हें एक रूपिम के अंदर नहीं रखा जा सकता इसके लिए इन रूपों का परिपूरक वितरण में होना आवश्यक है अर्थात् प्रयोग की दृष्टि से सभी का स्थान अलग–अलग बाँटा हाना चाहिए। (जहाँ एक का प्रयोग होता है वहाँ दूसरे का नहीं हो सकता इस प्रकार यदि उनका आपस में कोई विरोध नहीं है तो ऐसी स्थिति में वे सभी एक ही रूपिम के उपरूप हैं)।

उपर्युक्त उदाहरण में यदि हम 'स', 'ज़', 'ईज़', 'रिन' के वितरण का विश्लेषण करते हैं तो यह पाते हैं कि 'स' तो ऐसे शब्दों के अंत में आता है। जिनके अंत में 'स', 'श' के अतिरिक्त कोई अन्य घोष व्यंजन या कोई स्वर हो। 'ज' ऐसे शब्दों के अंत में आता है 'स', 'ज' 'श' ध्वनि हो इसी प्रकार 'रिन' चाइल्ड (Child) के साथ आता है इसका आशय यह है कि यह विरोधी नहीं है और इनका वितरण परिपूरक है विशिष्ट परिस्थितियों में एक आता है और उसमें दूसरा नहीं आता अतएव इन्हें एक ही रूपिम के संरूप या उपरूप माना जा सकता है।

निष्कर्षतः यदि कई रूप (क) समानार्थी हो, (ख) एक प्रकार की रचना में आए, (ग) परिपूरक वितरण में हो अर्थात् सबके आने की स्थिति निश्चित रूप से अलग–अलग हो विरोध न हो तो उन सबको एक ही रूपिम के उपरूप माना जाता है इन्हीं उपरूपों में किसी एक को रूपिम की संज्ञा दे दी जाती है जो प्रायः अधिक प्रयुक्त हो या जिसे मूल मानकर ध्वन्यात्मक दृष्टि से अन्य को स्पष्ट किया जा सके। उपर्युक्त उदाहरण के आधार पर कहा जा सकता है कि अंग्रेज़ी में संज्ञा शब्दों के बहुवचन बनाने में 'ज' रूपिम का प्रयोग होता है। इस 'ज' के संरूप या उपरूप 'ज', 'स', 'इज़', 'रिन' हैं।

(ii) रूपिम अथवा रूप ग्राम

रूप या पद के अवयव या घटक है जिनसे वाक्य बनता है।

'उसके रसोईघर में सफाई होगी।'

वाक्य में पाँच पद या रूप हैं जिन्हें सामान्य भाषा में शब्द कहते हैं। इन रूपों में सभी एक प्रकार के नहीं हैं कुछ तो छोटे से छोटे टुकड़े हैं इन्हें और छोटे खण्डों में विभाजित नहीं किया जाता जैसे – 'मे'। कुछ को छोटे खण्डों में बाँटा जा सकता है जैसे रसाईघर को रसाई और घर में। यदि घर को और छोटे टुकड़ों में बाँटना चाहें तो 'घ' और 'र' कर सकते है, यद्यपि इसमें न तो 'घ' का कोई अर्थ है और न 'र' का इसलिए ये दोनों खण्ड तो हैं पर सार्थक नहीं।

भाषा या वाक्य को लघुत्तम सार्थक इकाईयों को रूपिम या रूप ग्राम कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में उस, के, रसोई, घर, में, साफ, ई, हो, ग, ई – ये दस रूपिम हैं।

(iii) रूपिम के भेद

रूपिम के भेद दो आधारों पर हो सकते हैं प्रथम रचना और प्रयोग की दृष्टि से रूपिम मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं – मुक्त रूपिम, बद्ध रूपिम। द्वितीय अर्थ और कार्य के आधार पर भी रूपिम दो प्रकार के होते हैं अर्थ दर्शी रूपिम तथा संबंध दर्शी रूपिम अथवा कार्यात्मक रूपिम।

मुक्त रूपिम – वे रूपिम जो अकेले या अलग भी प्रयोग में आ सकते हैं। उपर्युक्त उदाहरणमें रसोई, घर, साफ ऐसे ही रूपिम हैं। ये अलग स्वतंत्र रूप से भी प्रयोग में आ सकते हैं जैसे रसोई बन चुकी है और अन्य रूपिमों के साथ भी आ सकते हैं जैसे – रसोईघर।

बहु रूपिम – ये वे रूपिम हैं जो अलग नहीं आ सकते हैं जैसे 'ता' (एकता) अथवा ई (लड़की, खड़ी) आदि। इन दो के अतिरिक्त कुछ लोग एक तीसरा प्रकार भी मानते हैं – मुक्त बद्ध या बद्ध मुक्त और आधे मुक्त। अंग्रेज़ी का From इसी प्रकार का है यह किसी अन्य रूपिम से नहीं मिलता, सर्वदा अलग रहता है इसलिए मुक्त है लेकिन साथ ही वह सर्वदा किसी पर आश्रित भी है, अकेले किसी भी प्रकार रचना का निर्माण नहीं कर सकता अतः बद्ध। हिंदी के परसर्ग (ले, को, मे, से) जब संज्ञा शब्दों के साथ आते हैं तो अलग रहते हैं जैसे – राम ने, सीता को आदि। यद्यपि सर्वनाम के साथ यह बद्ध रूपिम हो जाते हैं जैसे उसने, मुझको आदि। ये रूपिम स्थान की दृष्टि से भले ही अलग हो किंतु अर्थ की दृष्टि से हमेशा बद्ध रहते हैं अतः इन्हें बद्ध रूपिम में ही समाहित किया जाता है।

अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम के दो भेद होते हैं – (1) अर्थदर्शी रूपिम, (2) संबंधदर्शी रूपिम।

(1) अर्थदर्शी रूपिम

जिनका स्पष्ट रूप से अर्थ होता है और अर्थ व्यक्त करने के अतिरिक्त और कोई अन्य कार्य नहीं करते। विचारों का सीधा संबंध इन्हीं से होता है। भाषा के मूल आधार संबंध यही है। व्याकरणिक दृष्टि से ये कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे – क्रिया (हो, खा), संज्ञा (राम, किताब), सर्वनाम (वह, तुम), विशेषण (सुंदर) आदि। हर भाषा में इस प्रकार के रूपिमों की संख्या हज़ारों में होती है।

(2) संबंधदर्शी रूपिम

इनमें अर्थ का प्रधान्य नहीं होता। इनका प्रमुख कार्य संबंध दर्शन होता है हिंदी में परसर्ग प्रत्यय आदि ही हैं, ये रूपिम एक शब्द का संबंध वाक्य में दूसरे से दिखाते हैं और साथ ही लिंग, वचन, पुरुष, काल, अर्थ और भाव आदि की दृष्टि से अर्थदर्शी रूपिम में परिवर्तन भी लाते हैं जैसे 'लड़क' अर्थदर्शी रूपिम में ई, इयाँ, आ, ए आदि संबंधदर्शक रूपिम जोड़ने से लड़की, लड़का, लड़कियाँ, लड़के आदि संयुक्त रूपिम बन जाते हैं।

कुछ लोग खण्डीकरण के आधार पर भी रूपिम के दो भेद करते हैं –

(क) खण्ड रूपिम – वे रूपिम जिन्हें तोड़कर अलग किया जा सकता है।

(ख) अखण्ड रूपिम – वे रूपिम जिन्हें खण्डित नहीं किया जा सकता। बलाघात, सुर–लहर, सुर आदि रूप में स्वीकृत हैं।

जो सम्मान, संस्कृति और अपनापन हिंदी बोलने से आता है,
वह अंग्रेजी में दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता है।

मानव जीवन के विकास में प्रेरक विचारों का योगदान

सुश्री राजकुमारी शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी
एम–143, साउथ सिटी–1, गुरुग्राम

प्रेरक विचार वे विचार होते हैं जिनको मानव जीवन में उतारने के बाद किसी भी व्यक्ति की जिंदगी बदल सकती है। ये विचार मानव जीवन के अनुभव पर आधारित होते हैं। मानव अपने जीवन में तरह–तरह की कठिनाइयों से निपटने के लिए अपनी बुद्धि तथा विवेक का प्रयोग करता है तथा भावी पीढ़ियों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उनका पथप्रदर्शक बनता है ताकि आने वाली पीढ़ी उनके अनुभव का लाभ उठा सके। ऐसे ही कुछ प्रेरक विचार नीचे दिए गए हैं –

1. **विश्वास :**

विश्वास वह शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनियां में प्रकाश लाया जा सकता है। विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और अविश्वास भगवान के बनाए इंसान को पत्थरदिल बना सकता है। सकारात्मक सोचना या न सोचना हमारे मन के नियंत्रण में है और हमारा मन हमारे नियंत्रण में है। अगर हम अपने मन से नियंत्रण हटा लेंगे तो मन अपनी मर्जी करेगा और हमें पता भी नहीं चलेगा कि कब हमारे मन में नकारात्मक पेड़ उग गए हैं।

2. **दूसरों पर दोषारोपण न करना :**

जब तक हम अपनी समस्याओं एवं कठिनाइयों की वजह दूसरों को मानते हैं, तब तक हम अपनी समस्याओं एवं कठिनाइयों को मिटा नहीं सकते। खुद में वो बदलाव किए जाएं जो हम औरों में देखना चाहते हैं।

3. **अपने रास्ते खुद चुनना :**

चूंकि अपने से बेहतर स्वयं को कोई नहीं जान सकता अतः अपना रास्ता खुद चुनिए। विवेक एवं बुद्धि का प्रयोग करते हुए अपने बारे में निर्णय स्वयं लीजिए। अंधाधुंध दूसरों का अनुसरण मत कीजिए।

4. **सकारात्मक सोच रखना :**

इस दुनियां में कुछ भी असंभव नहीं है। हम वह सब कुछ कर सकते हैं जो हम सोचते हैं। बात केवल सकारात्मक सोच रखने तथा प्रयास करने की है। किसी भी परिस्थिति या घटना के बारे में गलत धारणा या नकारात्मक सोच रखने से ही कार्य कठिन अथवा असंभव लगता है। हम जैसे सोचते हैं वेसे ही बन जाते हैं। असंभव अथवा नामुमकिन हमारी सोच का ही परिणाम होता है।

5. **हार न मानना बल्कि प्रयासरत रहना :**

हर प्राणी को संघर्षो का सामना करना पड़ता है। प्रकृति का यही नियम हैं और जो व्यक्ति इस नियम को समझ जाता है वह सफल हो जाता है। सफलता की हर कहानी एक असफलता की कहानी भी है। जो व्यक्ति असफलता को चुनौती समझकर स्वीकार करता है वह असफलता को हरा देता है और जो व्यक्ति असफलता से डर जाता है वह कुछ नहीं कर पाता।

6. **वर्तमान में जीना :**

अगर हम वर्तमान में जियेंगे तो भविष्य अच्छा ही होगा और अगर हम बार–बार उस डर के साथ जीते रहेंगे जो अभी तक पैदा ही नहीं हुआ तो फिर हम अपना वर्तमान भी ख़राब कर देंगे और हमारा यही वर्तमान हमारा भविष्य ख़राब कर देगा। इसलिए हमें वर्तमान में ही जीना सीखना चाहिए और इसे बढ़िया बनाना चाहिए क्योंकि न तो भूत काल और न ही भविष्य काल पर हमारा नियंत्रण है। अतः अगर खुश रहना है एवं सफल होना है तो उस बारे में सोचना बंद कर दें जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं है।

7. **इच्छाशक्ति :**

कहा भी गया है कि अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने में लग जाती है। सफलता के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना अति आवश्यक है। हमारे लक्ष्य में डर का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अगर हमें स्वयं पर पूरा विश्वास नहीं है या फिर असफलता का डर है तो हमारा सपना या लक्ष्य शक्ति हीन है। जहाँ डर होता है वहां विश्वास कमज़ोर पड़ जाता है और जब हमारा स्वयं पर ही विश्वास नहीं रहता तो पूरी कायनात हमारी मदद नहीं करेगी।

8. **गिर कर उठना तथा पुनः प्रयास करना :**

महानता कभी न गिरने में नहीं बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है। मेहनत कभी बेकार नहीं जाती, यह विश्वास ही हमें आगे बढ़ने एवं निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है। हमारा हर प्रयास हमें एक कदम आगे बढ़ाता है। हम जैसे–जैसे आगे बढ़ते हैं वैसे–वैसे हमारे लिए सफलता के रास्ते खुलते जाते हैं। जो व्यक्ति विश्वास नहीं करता वो ज्यादा देर तक प्रयास नहीं कर पाता और जब वह प्रयास नहीं करता तो उसे दूर से ही आगे के सभी रास्ते बंद नजर आते हैं क्योंकि सफलता के रास्ते हमारे लिए तभी खुलते है जब हम उसके बिल्कुल करीब पहुँच जाते हैं।

9. **गलतियों से सीखना :**

समय पर अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करने से एक और गलती होती है। अपनी गलतियों से तभी सीख सकते हैं जब हम अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं। हमें परिस्थितियों और लोगों के अनुसार एडजस्ट करना पड़ता है जिसके लिए यह निर्णय लेना होता है कि हमें कब एडजस्ट करना है और कब परिस्थितियों से बाहर निकलना है। सही समय पर निर्णय नहीं लिए जाने की स्थिति में हमें परिस्थितियों एवं अन्य लोगों से वित्तीय, शारीरिक या भावनात्मक दुराचार का सामना करना पड़ेगा और हम धीरे–धीरे कमजोर होते जाएंगे। फिर कहीं ऐसा न हो कि हम इतने कमजोर पड़ जाएँ कि उस चक्रव्यूह से कभी निकल ही न पाएं।

10. **तनाव मुक्त रहना :**

सही सोच के लिए तनाव मुक्त रहना आवश्यक है। यदि हम उन बातों एवं परिस्थितियों की वजह से चिंतित हो जाते हैं, जो हमारे नियंत्रण में नहीं तो इसका परिणाम समय की बरबादी एवं भविष्य में पछतावा है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। उस बारे में सोचना बंद कर दीजिये जो हमारे नियंत्रण में नहीं है। जो हमारे नियंत्रण में नहीं है वो ऊपरवाले के नियंत्रण में है और अगर हम उन बातों को लेकर परेशान हैं जो हमारे नियंत्रण में नहीं तो इसका मतलब यह है कि हमें ऊपरवाले पर विश्वास नहीं है।

11. **अपना भाग्य खुद लिखना:**

हम चाहें तो अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर अपना भाग्य खुद लिख सकते हैं। अगर हमको अपना भाग्य लिखना नहीं आता तो परिस्थितियां हमारा भाग्य लिख देंगी। आत्मविश्वास से आशय स्वयं पर विश्वास एवं नियंत्रण से है। हमारे जीवन में आत्मविश्वास का होना उतना ही आवश्यक है जितना किसी फूल में सुगंध का होना। आत्मविश्वास के बगैर हमारी जिंदगी एक जिंदा लाश के समान हो जाती है। कोई भी व्यक्ति कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो वह आत्मविश्वास के बिना कुछ नहीं कर सकता। आत्मविश्वास ही सफलता की नींव है, आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति अपने द्वारा किये गए कार्य पर संदेह करता है और नकारात्मक विचारों के जाल में फंस जाता है। आत्मविश्वास उसी व्यक्ति के पास होता है जो स्वयं से संतुष्ट होता है एवं जिसके पास दृढ़ निश्चय, मेहनत, लगन, साहस, वचनबद्धता आदि संस्कारों की सम्पत्ति होती है।

12. **समय का सदुपयोग करना:**

जीवन में आगे बढ़ने के लिए समय का सदुपयोग करना नितांत आवश्यक है। ऐसा कहना उचित नहीं कि हमारे पास समय नहीं है क्योंकि हर व्यक्ति को मिलने वाला समय एक समान (24 घंटे) है। इसी समय में कुछ लोग महान बनते हैं और सफलता की ऊंचाई को छूते हैं। कबीर दास जी का यह छोटा सा दोहा, जीवन का सबसे बड़ा मंत्र बता देता है – 'काल करै सो आज कर, आज करै सो अब, पल में परलै होयेगी, बहुरी करोगे कब'। बीते हुए कल को भूल जाइए, उसका आज कोई वजूद नहीं। आज आपका है, आज एक नई शुरूआत कीजिए। जो व्यक्ति अपने समय को नष्ट कर देता है, समय उन्हें नष्ट कर देता है।

13. **हिम्मत का न हारना :**

मुसीबतों से भागना, नई मुसीबतों को निमंत्रण देने के समान है। जीवन में समय–समय पर चुनौतियों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है एवं यही जीवन का सत्य है। जो व्यक्ति हिम्मत रखते हुए चुनौतियों एवं मुसीबतों पर विजय प्राप्त करता है वही अपने जीवन में सफल होता है। एक शांत समुद्र में नाविक कभी भी कुशल नहीं बन पाता।

14. **कठिनाइयों का सामना करना :**

जीवन में कठिनाइयाँ हमें बरबाद करने नहीं आती हैं, बल्कि यह हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकलने में हमारी मदद करती है। कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज्यादा कठिन हो। संघर्ष में आदमी अकेला होता है, सफलता में दुनिया उसके साथ होती है, जिस–जिस पर ये जग हँसा है, उसी ने इतिहास रचा है। आज अनेकों ऐसे उदाहरण हमारे सम्मुख हैं जिनमें साहसी व्यक्तियों ने अनेकों विघ्न–बाधाओं को पार करके अदम्य साहस का परिचय देते हुए अक्षुण्ण सफलता प्राप्त की है।

15. **सपनों को जिंदा रखना :**

अपने सपनों को जिंदा रखिए। अगर हमारे सपनों की चिंगारी बुझ गई है तो इसका मतलब यह है कि हमने जीते जी आत्महत्या कर ली है। आज हमें दिव्यांजन जैसे लोगों पर गर्व होता है, क्योंकि ऐसे लोग हर बार यह साबित कर देते हैं कि इस दुनियां में असंभव कुछ भी नहीं है। ऐसे लोगों ने समय–समय पर यह साबित किया है कि उनके बुलंद हौसलों के आगे मुसीबतें और विकलांगता बहुत कमजोर है।

16. **रचनात्मक बनना, जीत प्राप्त करना :**

प्रत्येक सफल व्यक्ति में एक खूबी समान रूप से पाई जाती है और वह खूबी है रचनात्मकता जिसके बिना कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हो सकता। रचनात्मकता का अर्थ चित्रकार, कवि या लेखक बनने से नहीं बल्कि प्रत्येक कार्य को सच्चे दिल से करने से है। रचनात्मकता हर पल कुछ नया सीखने एवं प्रत्येक कार्य को उत्साह के साथ बेहतर तरीके से करने की आदत है। कार्य चाहे छोटा हो या बड़ा, रचनात्मकता उसमें नए रंग भर देती है। रचनात्मक व्यक्ति हर कार्य में खुशियाँ ढूंढ ही लेता है और यही उसकी सच्ची सफलता होती है। रचनात्मक बनिए, काम करने के तरीकों में बदलाव लाइए, खुद पर विश्वास कीजिए, जीत आपकी ही होगी।

जब तक गगन में चाँद, सूरज की लगी बिंदी रहे
तब तक वतन की राष्ट्रभाषा ये अमर हिंदी रहे
हिंदी हमारा शब्द, स्वर व्यंजन अमिट पहचान है।
हिंदी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।

भारत में महिला सशक्तिकरण

सुश्री मीना भारद्वाज
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है महिलाओं को अपने लिए निर्णय लेने में सक्षम बनाने हेतु शक्तिशाली बनाना। इसका वास्तविक अर्थ है कि महिलाओं को उनके अधिकारों से अवगत कराते हुए उनके द्वारा अपने लिए निर्णय लेने में समर्थ बनाना। महिला सशक्तिकरण का सीधा संबंध अधिकारों और शक्तियों से है अर्थात् महिलाओं की क्षमता या योग्यता जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। हमारे देश में पुरुष शासित समाज की परंपरा सदियों से चली आ रही है जिसमें महिलाएं हमेशा उन पर निर्भर रही हैं। उन्हें किसी भी तरह की स्वतंत्रता नहीं थी। समय बीतने के साथ महिलाओं को अपने अस्तित्व और शक्ति का एहसास हुआ। समय–समय पर महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाता रहा है तथा उनके उत्थान के लिए आंदोलन भी किये जाते रहे हैं। महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों को रोकने के लिए अहम भूमिका निभाने वाला एकमात्र तरीका महिला सशक्तिकरण है। भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए सरकार और कुछ संगठनों द्वारा प्रयास का किया जाना जारी है। हर एक व्यक्ति की सकारात्मक सोच महिलाओं के उत्थान के साथ एक नए दृष्टिकोण वाले समाज का निर्माण करने में समर्थ बनाएगी। महिलाओं को उनके अधिकारों से अवगत कराने के लिए देश में हर साल महिला दिवस (8 मार्च को) और मातृ दिवस भी मनाया जाता है। महिलाओं पर होने वाले अत्याचार पर तुरंत कार्रवाई करने के लिए महिला आयोग का भी गठन किया गया है।

महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना रखते हुए उनके उत्थान के संदर्भ में कहा गया है –

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात जहां स्त्रियों का सम्मान होता है, वहां देवी–देवता निवास करते हैं।

कोफ़ी अन्नान के अनुसार विकास के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण से बेहतर कोई भी उपकरण नहीं है।

ब्रिघम यंग के अनुसार किसी पुरुष को शिक्षित करने का तात्पर्य केवल एक पुरुष को शिक्षित करना है जबकि एक महिला को शिक्षित करने का अर्थ एक पीढ़ी को शिक्षित करना है।

यद्यपि हम महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़े हैं, परंतु अभी भी एक लंबी दूरी तय करनी शेष है। महिलाओं को सशक्त बनाना हमारे आने वाले कल, हमारे भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिलाओं को उनकी क्षमता से अवगत करवाना अब समय की मांग बन चुकी है। सरकार को स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, महिलाओं के लिए जागरूकता इत्यादि जैसे उपायों को अपनाना चाहिए। यह समाज के लिए जागरूकता उत्पन्न करने एवं सार्वजनिक मूल्यों का सृजन करने हेतु आवश्यक है, जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार महिला सशक्तिकरण के पांच घटक हैं –

(i) महिलाओं में आत्म–मूल्य की भावना;

(ii) विकल्प रखने और निर्धारित करने का उनका अधिकार;

(iii) अवसरों तथा संसाधनों तक पहुँच रखने का उनका अधिकार;

(iv) घर के भीतर तथा घर के बाहर दोनों स्थितियों में अपने जीवन को नियंत्रित करने की शक्ति रखने का उनका अधिकार; तथा

(v) राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक न्यायोचित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था के सृजन हेतु सामाजिक परिवर्तन की दिशा को प्रभावित करने की उनकी योग्यता।

महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार की योजनाएं

समाज में महिलाओं के योगदान को बढ़ाने हेतु उनके विकास को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं तथा कई योजनाएं बनाई गई हैं जो निम्न प्रकार हैं –

1. **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना** – इस योजना के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या और कन्या शिक्षा पर कार्य किया गया है। लड़कियों के बेहतर भविष्य के लिए उन्हें आर्थिक सहायता भी दी जाती है। इस योजना के माध्यम से इस बात को गलत प्रमाणित किया गया है कि लड़कियां अपने माता पिता के लिए एक बोझ होती है।

2. **प्रधानमंत्री उज्जवला योजना** – इस योजना के अंतर्गत गरीब महिलाओं को सशक्त बनाने और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के उद्देश्य से उन्हें मुफ्त एलपीजी गैस कनेक्शन दिया जाता है।

3. **महिला हेल्पलाइन योजना** – इस योजना के अंतर्गत महिलाओं की मदद के लिए 24

घंटे इमरजेंसी सहायता सेवा प्रदान की जाती है ताकि महिलाएं अपने विरुद्ध होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा या अपराध की शिकायत खुद कर सकें। इस योजना के अंतर्गत महिलाएं निर्धारित नंबर पर डायल करके अपनी शिकायत दर्ज करा सकती हैं।

4. **महिलाओं के लिए आरक्षण** – इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के सामाजिक स्तर को सुधारने के लिए प्रयास किसा गया है जिसके परिणामस्वरूप कई प्रदेशों में महिलाएं ग्राम पंचायतों में अध्यक्ष चुनी गई हैं।

5. **राजीव गांधी योजना** – किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की देखरेख में चलाई जा रही इस योजना से प्राप्त होने वाले लाभ को दो समूहों में विभाजित किया गया है। पहले समूह में 11–15 वर्ष की आयु वाली बालिकाओं को सरकार की तरफ से पका हुआ खाना दिया जाता है। दूसरे समूह में 15–18 वर्ष की आयु वाली महिलाओं को आयरन की गोलियां और अन्य दवाइयां उपलब्ध करवाई जाती हैं।

6. **इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना** – इस योजना के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं और दुग्धपान कराने वाली माताओं को पहले दो बच्चों के जन्म तक वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई जाती है।

7. **स्वाधार घर योजना** – समाज की कुछ महिलाओं जैसे रिहा कैदी, विधवा, मानसिक रूप से विकलांग, बेसहारा महिलाओं के पुनर्वास की व्यवस्था इस योजना के अंतर्गत की जाती है। तलाकशुदा महिलाओं को कानूनी परामर्श तथा चिकित्सा सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं।

महिला सशक्तिकरण कानून

महिलाओं को सामाजिक शोषण से बचाने और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए हमारी सरकार ने निम्नलिखित कानून बनाए हैं –

- न्यूनतम मजदूरी अधिनियम
- हिंदू विवाह अधिनियम
- दहेज निषेध अधिनियम
- मातृत्व लाभ अधिनियम
- गर्भावस्था अधिनियम
- कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण अधिनियम
- लिंग परीक्षण तकनीक अधिनियम
- बाल विवाह रोकथाम अधिनियम
- राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम

- विदेशी विवाह अधिनियम
- भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र

आज सशक्तिकरण के परिणाम–स्वरूप महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। प्रतिभाशाली महिलाओं में मेधा पाटकर, अमृता देवी, पी.टी. ऊषा, पी.वी. सिंधु, साइना नेहवाल, सानिया मिर्ज़ा, कल्पना चावला, इन्दिरा गांधी, झाँसी की रानी आदि के नाम शामिल हैं। कुछ क्षेत्र जिनमें महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, नीचे दिए गए हैं –

- संसद / राज्य विधानसभा / ग्राम पंचायतें : सदस्य / अध्यक्ष के रूप में
- कार्यपालिका / न्यायपालिका : मंत्रियों / न्यायधीशों के रूप में
- पुलिस, सैन्य / अर्द्ध सैनिक बल : विभिन्न पदों पर नियुक्ति द्वारा
- मीडिया : समाचार पत्रों / टी.वी. में विभिन्न पदों पर कार्य करके। टी.वी. में महिला उद्घोषकों तथा विज्ञापनों में महिलाओं की भूमिका भी इसमें शामिल है।
- प्रौद्योगिकी : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं मशीनीकृत / सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवा क्षेत्रों में सेवा प्रदान करके
- खेलकूद : इसमें सभी प्रकार के खेल शामिल हैं जैसे क्रिकेट, बैडमिंटन, हॉकी, वालीबाल, तैराकी, तीरंदाजी, शतरंज, कुश्ती, जूडो कराटे आदि।
- पर्यावरण सुधार : पर्यावरणीय विनाश के विरुद्ध विभिन्न आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाकर। इनमें चिपको आंदोलन तथा नर्मदा बचाओ आंदोलन भी शामिल है।
- पायलट : वायुसेना में हवाई जहाज उड़ाकर
- विभिन्न आंदोलनों में नेतृत्व

निष्कर्ष

अंत में यही कहा जा सकता है "महिला अबला नहीं अब सबला है, जीवन जीने का फैसला उसका अपना है" और "जब महिला में शक्ति होगी तभी राष्ट्र की उन्नति होगी"। महिलाओं को अपने ऊपर हो रहे अन्याय का विरोध करना होगा। देश की हर महिला को सम्पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बनने की जागरूकता फैलानी होगी। तभी सही अर्थों में महिला का सशक्तिकरण हो पायेगा। अब वक़्त आ गया है कि महिलाएं स्वतंत्र होकर अपने फैसले खुद लें और उन्हें किसी से घबराने की आवश्यकता नहीं है।

युवाओं की महत्ता

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सेवानिवृत्त, व.ले.प.अ., पूर्वोत्तर रेलवे
मकान नं. डी–5, सूरज कुण्ड कालोनी
पोस्ट गोरखनाथ, गोरखपुर–273015

किसी भी देश का भविष्य वहाँ की युवा पीढ़ी पर निर्भर होता है। युवा पीढ़ी को सतत, सजग और सचेत रहने की आवश्यकता है। सुयोग्य युवा पीढ़ी का निर्माण समय की माँग है। यहाँ कवि सुमित्रानंदन पंत की चार पंक्तियाँ याद आती हैं –

प्रभु का अनन्त वरदान तुम्हें,
उपभोग करो प्रतिक्षण नव नव,
क्या कमी तुम्हें है त्रिभुवन में,
यदि बने रह सको तुम मानव।

अपने अतीत की ओर झाँकें तो पता लगेगा कि हमारे देश का उत्थान जब भी हुआ उसमें प्रमुख भूमिका युवा पीढ़ी की रही। आज से लगभग चौबीस सौ वर्ष पहले हमारा देश अनेक छोटे–छोटे गणराज्यों में बँटा हुआ था। सभी गणराज्य राजनीतिक रूप से स्वतंत्र तो थे लेकिन सामाजिक, आर्थिक और कुछ भौगोलिक विषमताओं के फलस्वरूप उनमें मतैक्य नहीं था। एक राजनीतिक इकाई दूसरी राजनीतिक इकाई को नीचा दिखने में ही अपनी गरिमा समझती थी। उस समय एक सबसे मजबूत राजनीतिक इकाई के रूप में मगध राज्य का उदय हुआ जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी। यह राज्य अपने समय के राजनीतिक इकाइयों जैसे तक्षशिला, पंजाब और अन्य से अधिक बड़ा और शक्तिशाली था। ठीक उसी समय विदेशी धरती पर जहाँ आज ग्रीस एवं इटली है अर्थात् भूमध्य सागर के उत्तर तटीय क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी शासक पैदा हुआ जिसका नाम सिकंदर था। वह उत्तर–पश्चिम भारत की तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत था। आज जहाँ इराक, ईरान हैं, सबको रौंदते हुए वह तक्षशिला पहुँच गया और पंजाब तक के विशाल भूभाग को अपने अधीन कर लिया। आगे मगध राज्य की शक्ति का अनुमान कर वह अपने वतन को लौटने लगा और भारत के अभियान के लिए उसका भार अपने सेनापति सैल्यूकस के ऊपर छोड़ दिया। अपने देश युनान लौटते समय भारत में ब्यास नदी पार करते हुए सिंकदर की मौत भी हो गई। इधर तत्कालीन तक्षशिला विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त विष्णुगुप्त नामक एक युवक ने उस समय की राजनीति में भूचाल ला दिया। अपनी कूटनीतिक निपुणता एवं राजनीतिक दक्षता के परिणामस्वरूप विष्णुगुप्त ने एक

ऐसे युवा का चयन किया जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम से जाना जाता है। बौद्ध ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि विष्णुगुप्त ने जिसे चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, उसने चन्द्रगुप्त मौर्य की सहायता से शक्तिशाली मगध सम्राट घनानंद को पराजित कर उसे मार डाला और नंदवंश के स्थान पर मौर्यवंश की स्थापना हुई। यह घटना ईसा से लगभग 321 वर्ष पूर्व की है। चन्द्रगुप्त मौर्य एक यशस्वी और सुयोग्य शासक सिद्ध हुए। उनके राज्य का विस्तार वर्तमान ईरान के पूरब से लेकर, पश्चिमोत्तर भारत, अफगानिस्तान के दक्षिण–पूरब से लेकर, कुछ तटीय क्षेत्रों को छोड़कर सम्पूर्ण भारत पर था या यूँ कहें कि सम्पूर्ण भारत पर था। इतिहास में इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना उनके बाद किसी भी शासक ने नहीं की। चन्द्रगुप्त मौर्य एक कुशल योद्धा एवं सुयोग्य रणनीतिकार थे। चाणक्य जिन्हें आचार्य चाणक्य भी कहा जाता है, उनके गुरू एवं महामात्य (प्रधानमंत्री) थे।

उपरोक्त विवरण का संक्षेप में उल्लेख करने का आशय यह है कि योग्य युवाओं की दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प से राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर लाया जा सकता है। सन् 1857 से 1947 के कालखण्ड में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजगुरू, सुखदेव, असफाकुल्लाह खान, महात्मा गांधी के नेतृत्व में सुभाषचन्द्र बोस, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल आदि अनेकों युवकों ने देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में अद्भुत योगदान दिया। इसी प्रकार अनेक अन्य महापुरुषों जैसे लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय प्रभृत नेताओं ने अपनी युवावस्था से लेकर अपने अन्तिम दिनों तक अंग्रेज़ों के विरुद्ध राष्ट्र को जागृत किया। राष्ट्र के उन्नयन में अनेकों और भी युवा रहे जिनका उल्लेख इस छोटे से लेख में संभव नहीं है। देश के सभी युवा नायकों को उनके अनुकरणीय योगदान के लिये शत–शत नमन।

अभी 2019 के संसदीय चुनावों में यह देखने को मिला कि राष्ट्र की एकता अखण्डता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से युवा मतदाताओं ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। वर्तमान में हमारे देश में अनेकों समस्यायें हैं। भारत विश्व की एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभर रहा है। चहुँओर आत्म–निर्भरता एवं खुशहाली की ओर अग्रसर है। आज युवा वर्ग को अपने बल, बुद्ध और विवेक को सार्थक विकास की ओर से जाने की आवश्यकता है। इसके लिए देश को धर्म, भाषा और क्षेत्रियता के आधार पर बँटने न दिया जाए। अपेक्षित विकास और विश्वास की डोर में सबको पिरोकर देश के समेकित विकास में योगदान देने की आवश्यकता है। युवा वर्ग जिम्मेदारियों को समझें, वे जिस किसी क्षेत्र में कार्यरत हों, मेहनत, लगन और ईमानदारी के साथ अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करें।

एकता में शक्ति है और एकता से ही देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। यहाँ सबसे आवश्यक है कि देश में शिक्षा के स्तर में सुधार लाया जाए। लोकतंत्र में युवाओं को सुयोग्य और जागरूक बनाना बहुत आवश्यक है। वर्तमान में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर शोध हो रहे हैं। युवा वर्ग के समक्ष अनेकों चुनौतियाँ आएंगी जिनका सामना करना होगा लेकिन चुनौतियों का सामना पाश्चात्य रहन–सहन की नकल से नहीं होगा। युवा वर्ग को या कहे कि पूरे देश को अपने

नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना होगा। हर धर्म में नैतिकता, स्वच्छता एवं सहृदयता की सीख दी गई है। स्वाध्याय, सादगी, सजगता और स्वच्छता हमारा मूल मंत्र होना चाहिए इस से हम देश और समाज को आगे ले जा सकते हैं।

अशिक्षा ने हमारे राष्ट्र–जीवन का सदियों से अनिष्ट किया है। शिक्षा की कमी के कारण ही यह देश विदेशियों की गुलामी के बंधन में जकड़ा रहा। आज के युवा को कूप मण्डूक नहीं जागरूक बनने की आवश्यकता है। आज के युवा को साम्प्रदायिकता, रूढ़िवादिता और आडम्बर से अलग हटकर आपस में मेलजोल बढ़ाने की आवश्यकता है। भावनायें संकीर्ण नहीं सर्वांगीण और सर्वग्राह्य होनी चाहिए। वैदिक साहित्य के गहन अध्ययन से पता लगता है कि युवा वर्ग में केवल पुरुषों का ही महत्व नहीं था। अपाला, घोषा, सावित्री और संघमित्रा जैसी विदुषी महिलायें भी हमारे देश में हो चुकी हैं। सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा एक उच्चकोटि की वक्ता एवं सामाजिक जीवन में एक नया प्रतिमान स्थापित करने वाली विदुषी महिला थीं। प्रायः सभी लोग जानते हैं कि उन्होंने अपने भाई महेन्द्र के साथ पूरे दक्षिण–पूर्व एशिया एवं चीन आदि देश का विस्तृत भ्रमण किया और उस समय के प्रचलित बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। उन देशों की सरकारें आज अलग–अलग राजनीतिक विचार धारा की हैं लेकिन उनका धर्म आज भी मूलतः बौद्ध धर्म ही है।

युवा वर्ग में उत्साह और समर्पण का भाव होना आज समय की माँग है। जिस किसी क्षेत्र में हम शिक्षा ग्रहण कर रहे हों हमें पूरी निष्ठा, लगन और ईमानदारी के साथ उसे ऊँचाई तक पहुँचाने के लिए आत्मविश्वास होना चाहिए। युवा वर्ग में शौर्य की भावना और देश हित में प्राणों की आहुति देने की भावना श्री माखनलाल चतुर्वेदी की इन पंक्तियों से ग्रहण करनी चाहिए –

मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर सीस नवाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

ज्ञान का विस्तार करें। महात्मा गांधी का विचार था कि थोड़ा ज्ञान नुकसानदेह होता है। ज्ञान का विस्तार करते हुए, संषर्घशील बनने से ही राष्ट्र के लिए आवश्यक ऊर्जा जुटाई जा सकती है। अपनी प्रसिद्ध रचना "भारत भारती" में मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है–

भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ,
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ,
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है,
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।

हम वो हैं जो हमें हमारी सोच ने बनाया है, इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं, शब्द गौण हैं, विचार रखते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं।
– स्वामी विवेकानंद

कबीर वाणी : समरसता और दर्शन का प्रतीक

अभय राम सिंह
से.नि. सहायक लेखाधिकारी
ग्राम मोहम्मदपुर, पोस्ट मरहट (खुटहन)
जिला जौनपुर, उत्तर प्रदेश

सन्त कबीर ऐसे संत हैं जिनके भजन और उपदेश जाति एवं वर्गों से परे अनेक जातियों एवं सामाजिक समूहों में लोकप्रिय हैं। समाज के ऊँचे पायदान पर स्थित और निचले पायदानों पर बैठे सामाजिक समूह एक साथ कबीर को गाते हैं। कबीर की चेतना जाति, धर्म एवं वर्गों की दीवार तोड़ देती है। उन्हें हिंदू और मुसलमान दोनों एक साथ सुमिरते हैं। उनका निर्वाण स्थल मगहर इसका एक जीता जागता उदाहरण है। उनका कथन है –

मन लागो मेरा यार फकीरी में,
सो सुख नाहीं अमीरी में।

सन्त कबीर एक युगद्रष्टा, तत्ववेत्ता, समाज सुधारक और मानवीय मूल्यों के अप्रतिम प्रतीक हैं। उनका जीवन यह रेखांकित करता है कि मूल्यों को स्थापित करने के लिए शिक्षा से अधिक उच्च संस्कार की आवश्यकता है। वे निर्गुण ब्रह्म राम के उपासक थे और मूर्ति पूजा के धुर विरोधी थे। जुलहा परिवार में जन्मे कबीर के गुरू काशी के रामानन्द थे। कबीर ने ही लिखा है –

जाति न पूंछो साधु की, पूंछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

सन्त कबीर और संत रविदास का जीवन इस विचार को प्रमाणित करता है कि गुलामी काल में जब शिक्षा एवं समृद्धि लगभग समाप्त हो गई थी और समाज में कई विकृतियाँ घर कर गई थीं तब भी भारत में जात–पांत से परे हटकर हर वर्ग को सम्मान मिलता था।

कबीर मूर्ति पूजा के प्रबल विरोधी थे। वे कहते हैं –

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
ताते ए चाकी भली, पीस खाय संसार।।

इसी प्रकार मुस्लिम समाज की आलोचना करते हुए वे कहते हैं –

कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद दईं बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, का बहरा भए खुदाय।।

कबीर का यह संदेश था कि ईश्वर एक है जो इनके निम्न दोहे में आलोकित हैं –

हिंदू मुए राम कहि, मुसलमान खुदाय।
कहै कबीर एक जीवता, दुईं में कदम न जाय।।

उन्होंने मानव के दोहरे चरित्र की भर्त्सना करते हुए कहा है –

चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।

अहिंसा के पुजारी कबीर कहते हैं –

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात हैं, ताकी कौन हवाल।।

उन्होंने छोटे बड़े सभी का सम्मान करने की दीक्षा दी है। उनके अनुसार किसी को निर्बल समझकर उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उनका निम्न दोहा प्रस्तुत है–

तिनका कबहुँ न निंदिए, जो पायन तर होय।
कबहुँ उड़ आँखिन परे, पीर घनेरी होय।।

कालचक्र की जीवन्तता स्वीकार करते हुए कबीर ने कहा है – सबै दिन होत न एक समाना। किसी घटना के घटित होने या फल मिलने के निश्चित समय की पुष्टि में उन्होंने उकेरा है –

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

यानी मन में धीरज रखने से सब कुछ होता है, यदि कोई माली सौ घड़े पानी से भी पेड़ को सींचने लगे तब भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा। संत कबीर ने मन की निर्मलता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने विकार रहित निर्मल मन कामना निम्न पंक्तियों में की है –

जब लगि मनहि विकारा, तब लगि नहिं छूटे संसारा।
जब मन निर्मल करि जाना, तब निर्मल माहि समाना।।

उनके अनुसार स्वयं का ठगा जाना तो क्षम्य है परन्तु दूसरों को ठगना महान अपराध है जो उनकी निम्न पंक्तियों में आलोकित है –

कबीर आप ठगाइए, आप न ठगिए कोय।
आप ठगे सुख उपजै, अन्य ठगे दुःख होय।।

मन की निर्मलता की महत्ता स्वीकार करते हुए उन्होंने पुनः उकेरा है –

पहले ए मन काग था, करता आतम घात।
अब तो मन हंसा भया, मोती चुन–चुन खात।।

आगे पुनः वे कहते हैं –

तन को जोगी सब करैं, मन को विरला कोई।
सब सधि सहजै पाइयै, जो मन जोगी होय।।

मन की निर्मला से हृदय में प्रभु का वास होता है जिसे कबीर ने कुछ इस प्रकार कहा है –

कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूँढ़े बन माहिं।
ऐसे घट–घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं।।

अर्थात् मृग के कुण्डल में कस्तूरी का वास होता है, परन्तु उसकी सुगंध से वह वन में उसे इधर–उधर ढूँढ़ता है। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक जीव के अन्तःकरण में राम का वास रहता है जिसे वह देख नहीं पाता है। कबीर ने पुनः कहा है –

हीरा तहाँ न खोलिए, जहाँ खोटी है हाट।
कसकरि बाँध्यो गाठरी, उठि करि चलो बाट।।

यानि जहाँ तुम्हारे गुण की कद्र नहीं वहाँ से चुपचाप निकल चलो। इस प्रकार उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से जीवन के हर पहलू का चित्रण करते हुए मन की निर्मलता पर विशेष ध्यान दिया है। सामाजिक समरसता का चित्रण करते हुए उन्होंने उकेरा है –

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, और न भूखा जाय।।

इसके साथ ही कबीर ने "ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय" कहकर प्रेम को महामण्डित किया है। उनके अनुसार "प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट विकाय।"

सन्त कबीर को प्राचीन भारतीय ज्ञान का ज्ञाता कहा जाता है। वे तंत्र के रहस्यों से लेकर वैदिक दर्शन तक हर चीज़ को बड़ी सरलता से व्यक्त करने में सक्षम थे। उनके प्रसिद्ध साखी "ए राम नाम रस बीनी चदरिया झीनी रे झीनी' की निम्न पंक्तियों "अष्ट कमल दल चरखा सोहे, पंच तत्व गुन तीनी चदरिया, झीनी रे झीनी" में कुण्डलिनी जागरण के आठ चक्र, पाँच तत्व और त्रिगुणात्मक प्रकृति तीनों का बिम्ब है। कबीर के पदों में गहन ज्ञान और दार्शनिक तत्व भी बड़ी सहजता से पिरोए हुए हैं। क्वांटम फिजिक्स के प्रख्यात हाइजनबर्ग के अनिश्चितता के सिद्धांत के अनुसार सूक्ष्म कणों से लेकर अखिल ब्रह्माण्ड तक किसी भी कण की स्थिति और गति का एक साथ निर्धारण असंभव है। यदि स्थिति सही होगी तो गति में त्रुटि होगी और इसी प्रकार यदि गति सही होगी तो स्थिति में त्रुटि होगी। यदि हम इस वैज्ञानिक सिद्धांत की कसौटी पर कसैं तो जो यह कहते हैं कि मैं ईश्वर को देखूँ तभी उन पर विश्वास करूँगा, उनकी बात वैज्ञानिकता के परे है। वस्तुतः इस सिद्धांत के अनुसार ईश्वर और मैं एक साथ होना नितांत असंभव है। कबीर का निम्न दोहा विज्ञान और आध्यात्म के चरम समन्वय का प्रतीक है –

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अंधियारा मिट गया, दीपक देखा माँहि।।

यदि हम इसकी वैज्ञानिकता से परे सहज जीवन में इसका भाव पढ़ें तो हमें ज्ञात होगा कि मैं यानी अहंकार के रहते ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अपनी आत्मा में दीप प्रज्वलित कर अंधकार को तभी हटाया जा सकता है जब इनमें अंधकार विहीन ईश्वर का वास हो।

संत कबीर ने अपने कृत्य में सत्यता, निश्छलता और परोपकारिता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने हमें दीक्षा दी है कि हमें ऐसा कर्म करना चाहिए जिससे देहावसान के समय सारा जगत हमारी अनुपस्थिति पर विलाप करने लगे। इसी तथ्य को उन्होंने निम्न पंक्तियों में उकेरा है।

कबीर जब हम पैदा हुए, जग हँसा हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोए।।

हम आशान्वित हैं कि हम अपने संतों, ऋषियों, मुनियों की साधना "सत्यमेव जयते" को अंगीकार करते हुए भारतीय राष्ट्र एवं संस्कृति को अक्षुण्ण रखकर "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा को फलीभूत कर सकेंगे।

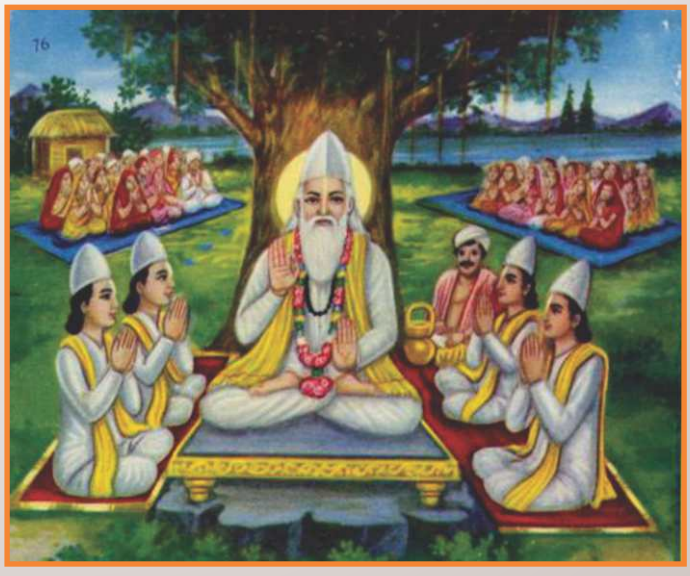

बहुआयामी पर्व मकर संक्रांति

मदन गोपाल शर्मा
60 अनुपम नगर
जीवाजी विश्वविद्यालय मार्ग
ग्वालियर–474011

भारतीय ज्योतिष में सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने के काल को संक्रांति कहा जाता है, इस तरह हर महीने संक्रांति आती है पर मकर संक्रांति के पर्व का विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर्व पूरे देश में मनाया जाता है। इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं साथ ही सूर्य उत्तरायण भी होते हैं। सूर्य दक्षिणायन और उत्तरायण स्थिति में छह–छह माह रहते हैं। मकर संक्रांति पर्व सूर्य के उत्तरायण होने का भी पर्व है। जिसका धार्मिक, आध्यात्मिक व खगोलीय महत्व है। इस दिन से सूर्य के ताप में वृद्धि होती है, रातें छोटी व दिन बड़े होने लगते हैं, मन, मस्तिष्क और चेतना भी प्रभावित होती है।

मूल रूप से मकर संक्रांति सूर्य आराधना का पर्व है। देश के अलग–अलग हिस्सों में अलग–अलग तरीके से और अलग–अलग नामों से मनाया जाता है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान में संक्रांति पर्व के नाम से मनाया जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार में इसे खिचड़ी पर्व के नाम से मनाया जाता है। पंजाब में लोहड़ी पर्व के रूप में जाना जाता है।

असम व पूर्वोत्तर में बीहू पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। दक्षिण भारत में यह पर्व पोंगल के नाम से जाना जाता है। बंगाल में तो गंगासागर विश्वप्रसिद्ध मेला लगता है, जिसमें लाखों लोग भाग लेते हैं। महाराष्ट्र में तिल–गुड़ के आदान– प्रदान के साथ मीठा बोलने की सलाह दी जाती है। मकर राशि शनि की राशि है, इस राशि में सूर्य के प्रवेश का ज्योतिषीय महत्व है, यही कारण है कि इस दिन नदियों के संगम पर स्नान करने और दान–पुण्य करने की सलाह दी जाती है। सूर्य नवग्रहों में सर्वोपरि है और इससे सभी राशियाँ प्रभावित होती हैं। सूर्य की आराधना सभी देशों व सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में अनादिकाल से होती है क्योंकि जहाँ एक सूर्य स्वास्थ्य देने वाला है तो दूसरी ओर अन्न प्रदाता है। सूर्य की ऊष्मा के कारण ही फसल, पेड़–पौधे आदि विकसित होते हैं।

मकर संक्रांति पर खिचड़ी का विशेष महत्व है, देश के काफी बड़े भूभाग में रहने वाले लोग इस दिन खिचड़ी खाते हैं। इस खिचड़ी में दाल–चावल के साथ सब्जी के साथ तिल भी डाला जाता है। खिचड़ी को केवल बीमार लोगों का भोजन मानना उचित नहीं है। यह पूरी तरह पौष्टिक और स्वादिष्ट व्यंजन है। इसे खाने से शरीर को पर्याप्त ऊर्जा मिलती है। भारतीय

व्यंजन में खिचड़ी का उपयोग बहुत प्राचीन है। इसका हजारों वर्ष का इतिहास है। साधू, सन्यासी, योगी अनादि काल से खिचड़ी का उपयोग भोजन के रूप में करते रहे हैं। रामायण–महाभारत काल में भी खिचड़ी का उल्लेख मिलता है। सही मानों में खिचड़ी स्वास्थ्यवर्धक भोज्य पदार्थ है और सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके खाने से स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इसे घी, पापड, दही और अचार के साथ खाने से इसका स्वाद बहुत बढ़ जाता है। इसे आहार विशेषज्ञों ने संतुलित आहार की संज्ञा दी है, साथ ही इसे हर उम्र के लोगों के लिए मुफीद बताया गया है।

देश के कई हिस्सों में इस पर्व को नई फसल के पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। इस समय नई फसल आती है तो किसान के लिए यह निश्चित रूप से प्रफुल्लता का पर्व होता है। लोहड़ी पर पंजाब में नव अन्न के आगमन के रूप में नाच–गा कर मनाते हैं। असम में बीहू पर्व भी नई फसल के आगमन पर मनाया जाता है। भारत कृषि प्रधान देश है अतः मकर संक्रांति पर हमारा अन्नदाता किसान इस पर्व को विशेष उत्साह और आनंद के साथ सामूहिक रूप से मनाता है।

मकर संक्रांति पर विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने की परम्परा है। ज्यादातर व्यंजनों में तिल और गुड़ को अवश्य शामिल किया जाता है। इस मौसम में तिल और गुड़ का सेवन स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हितकारी है। ठंड के मौसम में, तिल और गुड़ का सेवन शरीर को ठंड से बचाता है। तिल, गुड़ और मूँगफली में प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम और कई विटामिन होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। देश के कई हिस्सों में दही–चूड़ा खाने की भी परंपरा है। इस दिन लोग सामूहिक रूप से दही–चूड़ा की दावत करते हैं।

मकर संक्रांति पर कई प्रदेशों में पतंग उत्सव होता है। व्यापक रूप से रंग बिरंगी पतंगें उड़ाई जाती हैं। इसमें सभी जाति–धर्म के लोग भाग लेते हैं और सामाजिक सद्भाव प्रदर्शित करते हैं। पतंग और डोर का आपसी बंधन हमें भावनात्मक जुड़ाव की प्रेरणा देता है। हमारे आपसी संबंध तनावपूर्ण होकर जकड़े नहीं इसलिए पतंग की तरह इनमें ढील देने की आवश्यकता है। आपसी तनातनी में रिश्तों की डोर को टूटने से बचाये रखने की आवश्यकता भी हम पतंग उत्सव से सीख सकते हैं।

अभिव्यक्ति की आजादी

प्रीतम चौहान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
25–25, आडिट भवन, बांद्रा–कुर्ला सर्कल, मुम्बई

हाल में खबर सुनी थी कि चीन के उद्योगपति जैक मा लापता हो गए है क्योंकि उन्होंने चीन की सरकार की आलोचना की थी, जब आप ये सुनते हैं तो कितना अटपटा लगता है क्योंकि हम लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी मिली है। बिना किसी जाति, धर्म, लिंग, सामाजिक भेदभाव के ये व्यवस्था भारत के संविधान निर्माताओं द्वारा लम्बी बहस के बाद सुनिश्चित की गई थी, जिसका वर्णन भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भी मिलता है, जो इसकी महत्ता को प्रदर्शित करता है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद संख्या 19(1) में अभिव्यक्ति की आजादी की विवेचना की गई है। जिसमें देश के नागरिकों को अपने विचारों को बोलकर लिखकर या अन्य किसी माध्यम से प्रकट करने की अनुमति दी है। साथ ही अनुच्छेद 19(2) देश की सुरक्षा, संप्रभुता और अखंडता बनाए रखने के लिए इसकी सीमा भी तय करता है। देश के किसी भी नागरिक को अपनी इस आजादी का इस्तेमाल करते हुए अनुच्छेद 51(क) में वर्णित मूल कर्त्तव्यों का भी ध्यान रखना चाहिए ताकि उसके आचरण से एक जिम्मेदारी का एहसास हो।

2004 से पहले तक भारतीयों द्वारा राष्ट्र ध्वज अपने निजी कार्यालयों या घरों पर फहराने की अनुमति नहीं थी, यहाँ भारत संघ बनाम नवीन जिन्दल के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्र ध्वज फहराना अभिव्यक्ति की आजादी माना तथा कहा कि इसके जरिए देश के नागरिक राष्ट्र के प्रति अपनी वफादारी पेश करते हैं। इसके अतिरिक्त अनुच्छेद 19(1), सरकार या सरकार के किसी भी विभाग द्वारा किए गए फैसलों की आलोचना का अधिकार भी यहीं से परिभाषित होता है। हम जब भी व्यक्तिगत तौर पर अभिव्यक्ति की आजादी का प्रयोग करें तो हमें ध्यान रखना होगा कि सामने वाले अर्थात् अपनी टिप्पणी करते हुए उसके मान–सम्मान तथा अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर इस अधिकार का इस्तेमाल करना चाहिए, तभी अभिव्यक्ति की आजादी की सार्थकता सही साबित होगी।

अंत में एक छोटी सी कविता के साथ आपको छोड़े जा रहा हूँ।

जीवन का एक सार सुना है,
मन में एक सवाल बुना है।
कैसे करें जीवन को पार,
कैसे हो जीवन उद्धार।
आशा है, एक किरण आएगी,
मुझे मझदार पार लगाएगी।
मगर सदियों बीत गई इस पल को,
पर सवाल न बुझा अब तक इस मन को।
कांटों भरा है ताज सर पर
झूठी वाणी है अब कंठ पर
सिर्फ एक ही लक्ष्य रह गया है,
छल कपट से दाना–पानी।
कैसे करें जीवन को पार,
कैसे हो जीवन उद्धार।

हरी सब्जी

आलोक कुमार 'अलक'
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
झारखण्ड, रांची

"माँ, आज कोई हरी सब्जी पकाओ ना, कब से माड़ भात खा रहे हैं,' मंगरा ने जब यह बात अपनी माँ से कही तो बुधनी परेशान हो उठी। कितने महीनों से उसका पति ऐतवा घर में बिना काम के बैठा था। जब से कोरोना नाम की महामारी फैली थी, उसकी तो पूरी दुनिया ही जैसे बैठ गयी थी।

ऐतवा दिहाड़ी मजदूर था। अक्सर ही उसे आस–पास बनने वाले निर्माणाधीन घरों या अपार्टमेंटों में मजदूरी का काम मिल जाता था। रांची के तुपुदना क्षेत्र की टोंकों नामक बस्ती में पुश्तैनी जायदाद के नाम पर पिता द्वारा मिली एक झोपड़ी थी, जिसमें उसका पूरा परिवार रहता था। परिवार में उसकी पत्नी बुधनी के अलावा दो बेटी और एक बेटा मंगरा था। बड़ी बेटी सोमरी दस साल की, छोटी बेटी ननकी सात साल की और मंगरा पाँच साल का था।

इस क्षेत्र में काम की कोई कमी न थी। शहर अपने पैर पसार रहा था। शहर की चकाचौंध से अभिभूत कितने लोग गाँव छोड़ पलायन कर रहे थे। पहले रोजी रोटी की समस्या सुलझाते और जैसे ही दो चार पैसे जुटते, अपने ऊपर पक्की छत ढालने की लालसा में जुट जाते। कुछेक साल पहले तक ऐतवा के गाँव के आसपास का पूरा इलाका खेतिहर क्षेत्र था। किसान हल जोतते और धान, सब्जी उगाते। पर देखते ही देखते सारे खेतों को छोटे बड़े मकानों ने लील लिया था। आस पास बड़ी सी कंक्रीट की बस्ती तैयार हो गयी थी। झोंपड़ियों वाली बस्ती के लोग, कंक्रीट वाले जंगल के तेजी से फैलाव को भय मिश्रित आश्चर्य से देख रहे थे। पता नहीं कब यह उनकी बस्ती को भी लील ले।

पर ईंट पत्थरों से बना जंगल आजीविका का बड़ा सहारा था। काम की कोई कमी न थी। बस्ती के पुरुष अपने मिजाज के मुताबिक मजदूरी अथवा छोटे मोटे धन्धे करते थे वहीं स्त्रियाँ भी रेज़ा कुली या घरों में चौका बर्तन का काम पकड़ लेती। दो जनों की सम्मिलित कमाई से बाल बच्चों की परवरिश के साथ उनकी स्कूल की शिक्षा का खर्च भी निकल जाता। ऐतवा की जिंदगी की गाड़ी किसी तरह से चल रही थी, पर अचानक से दिन बदल गये।

कोरोना महामारी ने मानो जीवन के पहिये को अचानक से रोक दिया था। सालों से भागती दौड़ती

जिंदगी में एकाएक ब्रेक लग गया था। लोग बाग अचानक से घरों में कैद हो कर रह गये थे। ऐसा तो पहले कभी न हुआ था। सरकार ने घरों से बाहर निकलने पर पाबंदी लगा दी थी। सारे काम काज ठप्प पड़ गये। दुकानें बंद थी, कल कारखाने बंद थे, भवन निर्माण की गतिविधियां बंद थी। सड़कें सुनसान थी और गलियाँ वीरान। मानो प्रकृति ने इंसान को काल कोठरी में बंदी रहने की सजा सुनाई हो। अपनी हद से बहुत ज्यादा अतिक्रमण करने की सजा तो मिलनी ही थी।

परंतु इस सजा की चोट की मार सबसे ज्यादा पड़ी, रोजाना कमा कर खाने वालों पर। हर दिन कुआं खोदकर पानी पीने की विवशता ने इनकी जिंदगी भिक्षुकों सी बना दी थी। किसी तरह यहाँ वहाँ से जुगाड़ कर पेट की आग बुझ रही थी।

ऐतवा पिछले डेढ़ महीने से बिना काम के बैठा हुआ था। हर रोज उसकी सुबह इस आस के साथ शुरू होती कि आज कोई काम मिल जाए तो वह भी बच्चों के लिए कुछ जरूरत का सामान ले पाये, पर उसकी आस पूरी न हो पाती। शहर में लॉकडाउन बढ़ता ही जा रहा था, और साथ में गरीबों की आह भी।

राशन पानी तो कब के खत्म हो चुके थे। कुछ पैसे इतने बरसों में बचा कर रखे थे, वह भी उदर की आग की भेंट चढ़ गये। अब तो हर दिन खाने की जद्दोजहद थी। सरकार ने गरीबों को 10 किलो अनाज मुफ्त देने का एलान किया था, बस इसी से जिंदा रहने की गुंजाइश बची थी।

पिछले पंद्रह दिनों से बुधनी भात और आलू पका रही थी। दाल तो कभी–कभी ही बन पाती थी। राशन में मिलने वाला सामान तो पंद्रह बीस दिनों तक चल पाता था। कभी कोई समाजसेवी संस्था अथवा दानशील प्रकृति के मनुष्य अनाज बाटने आ जाया करते थे, तभी इस परिवार के बाकी दिनों का गुजारा हो पाता था। हरी सब्जी तो दूर की कौड़ी थी। घर से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर सरकारी दाल भात केन्द्र था। लॉकडाउन होने के बाद कुछ दिनों तक दो समय की खिचड़ी बँटती थी। घंटों पहले लाइन में आगे खड़े रहने पर थोड़ी बहुत मिलाई गई हरी सब्जियों के दर्शन हो जाया करते थे। बुधनी के बच्चों ने तभी हरी सब्जी का स्वाद चखा था। दोनों बेटियाँ और बेटा सब्जियों की लालसा में घंटों पहले लाइन लगाए रहते। खड़ा तो बुधनी और ऐतवा को भी रहना पड़ता, पर बड़ों के लिए यह अति मजबूरी का कार्य था, इसमें बेबसी थी, आह थी और नैराश्य की भावना थी। वहीं बच्चों को इन भावनाओं से कोई मतलब न था। उन्हें तो इस बात की खुशी थी कि – 'चलो, पेट भर कर खाना मिलेगा, भले ही इसके लिए घंटों लाइन में क्यों न लगना पड़े।'

परंतु यह केन्द्र भी कुछ दिन पहले बंद हो चुका था। सरकार ने जन वितरण केन्द्रों से कच्चे अनाज की आपूर्ति का ही एकमात्र विकल्प बनाए रखा था। भोजन की व्यवस्था प्रवासी मजदूरों के लिए थे, जो लॉकडाउन में फंस गए थे। ज्यादातर प्रवासी घर वापस लौट चुके थे। सरकार की नजर में अब इसकी जरूरत न थी। पके भोजन में संक्रमण का खतरा ज्यादा था, यह भी एक वजह थी। ऐसे में एक दिन जब उसके बच्चों ने माँ से हरी सब्जी खाने की फरमाइश की बुधनी के हाथ पाँव फूल गए। पिछले एक सप्ताह से वह माड़ भात ही पकाते आ रही थी। दो चार

आलू भी डाल देती थी। पर आज मंगरा ने एक सब्जी बेचने वाले की पुकार सुन ली थी। उसका मन सब्जी पर चंचल हो उठा। उसे क्या पता था कि इतनी कठिन फरमाइश पूरा करना माँ के लिए आसान न था। घर में पैसे न थे जिससे बुधनी सब्जी मोल ले पाती। सारे पैसे इस दुर्दिन की भेंट चढ़ चुके थे। अब तो यह हाल था कि दस–बीस रूपयों के लिए भी किसी के सामने हाथ फैलाने पड़ते। दो तीन जोड़े कपड़े और कुछ बर्तन कुल यही जमा पूंजी थी। बुधनी का बस चलता तो इन्हें बेच कर बच्चों की फरमाइश पूरी कर देती, परंतु बाजार में इनका कोई मोल न था। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। अब तो बस यही एक रास्ता था कि बच्चों सहित कटोरा लेकर भगवान जगन्नाथ के मंदिर के सामने बैठ जाए। लेकिन मंदिर भी तो बंद थे, भिक्षा कौन देता?

ऐतवा घर पर न था। काम की तलाश में दिन भर वह इधर उधर मारा मारा फिरता। शाम को निराश घर लौटता। कुछ दिनों से उसकी यही दिनचर्या थी। अचानक बुधनी को कुछ याद आया। बस्ती से बाहर निकल रोड तक पहुंचने के क्रम में कुछ खाली प्लॉट मिलते थे। ज्यादातर प्लॉटों को चारदीवारी से घेर दिया गया था। इन्हीं में से एक बड़ी सी चारदीवारी वाले प्लॉट में उसने सब्जियों के कुछ पौधे और साग पात लगे देखे थे। प्लॉट के अंदर निर्माण कार्य चल रहा था। ईंट और बालू के ढेर बाहर रखे हुए थे, पर जब से लॉकडाउन लगा था, कामबंद पड़ा था। उसे उम्मीद थी कि अभी वहाँ पर कोई न होगा, और वह आसानी से कुछ हरी सब्जियाँ पा सकेगी। उसे पता था कि दूसरे की जमीन से कुछ लाना चोरी करने के समान था, परंतु बच्चों की मांग ने उसे सही गलत की दीवार को गिरा देने पर विवश कर दिया था।

बुधिया ने अपनी छोटी बेटी ननकी को मंगरा का ख्याल रखने को कह, बड़ी बेटी सोमरी के साथ घर से निकल पड़ी। थोड़ी ही देर में दोनों माँ–बेटी उस प्लॉट पर पहुँच गयी। बहुत दिनों से काम बंद रहने के कारण आस पास घनी झाड़ियाँ उग आई थी। प्लॉट के सामने वाला हिस्सा थोड़ा खुला था, जिस पर कंटीली तारें बंधी थी। शायद अंदर के सामान को चोरी से बचाने के लिए प्लॉट मालिक ने तारों की घेराबंदी कर रखी थी। बुधिया ने मुख्य रास्ता छोड़ चारदीवारी फांद कर अंदर जाने का निश्चय किया। लगभग पाँच फीट ऊंची दीवार लांघना उसके लिए कोई कठिन कार्य न था। उसने पहले अपनी बेटी को दीवार पार करवाई और फिर खुद भी अंदर कूद गई। जगह–जगह भवन निर्माण की सामग्रियाँ रखी पड़ी थी। एक कोने में अनेकों सरिये भी रखे हुए थे। इन सरियों की कीमत हजारों में थी, पर बुधनी को इनसे क्या मतलब? वह इनसे बचते बचाते पीछे वाले हिस्से में पहुंची जहां हरे भरे पौधे लगे हुए थे। इस हिस्से में निर्माण कार्य न हुआ था। ऐसा जान पड़ता था कि मालिक ने इस हिस्से में बागवानी के लिए खाली छोड़ रखा था।

पौधों की निकाई कुड़ाई की गयी थी और पानी भी डाला गया था। ऐसा जान पड़ता था कि कोई नियमित रूप से इनकी देखभाल कर रहा था। बुधिया को डर लग रहा था कि कहीं उसकी चोरी पकड़ी न जाए। उसका दिल जोर–जोर से धड़क रहा था। इतनी घबराहट तो उसे पहली बार ससुराल जाने के समय भी नहीं हुई थी। उसने जल्दी–जल्दी कुछ बैंगन और झींगा तोड़े। लाल साग

के पौधे भी अपनी भरपूर सम्पदा के साथ इठला रहे थे। सोमरी ने माँ को देख इनकी तरफ इशारा किया। बुधिया समझ गई बेटी का मन लालायित है, उसने हामी भर दी। देखते ही देखते सोमरी के दोनों हाथ लाल पत्तियों से भर गए। इन सबके बीच बुधनी की घबराहट बढ़ती जा रही थी। पहले कभी उसने ऐसा काम न किया था। उसने कई घरों में काम किया, पर कभी किसी वस्तु पर नजर न गड़ायी थी। हाँ कभी मालकिन ने खुशी से कुछ दे दिया हो तो अलग बात थी। अगर इतनी बुरी स्थिति न आती तो वह कभी भूलकर भी ऐसा काम न करती। उसकी छोटी सी टोकरी लगभग भर चुकी थी। सोमरी के दोनों हाथ भी लगभग भरे पड़े थे। अब और कुछ लेने की गुंजाइश न बची थी। अब वह जल्द–से–जल्द बाहर निकल जाना चाहती थी। बच्चों के लिए हरी सब्जियों का इंतजाम हो चुका था। देखा जाए तो जो सब्जियां उसने तोड़ी थी उनका मूल्य पचास रूपयों से अधिक न था, परंतु मन का अपराधभाव उससे लाख गुना अधिक था उसने आँखों के संकेत से बेटी को बाहर निकलने का आदेश दिया। सोमरी लगभग भागती हुई सी प्लॉट के मुख्य द्वार तक पहुँची। दोनों हाथ भरे होने के कारण चारदीवारी पर चढ़ना संभव न था, उसने तारों की तरफ देखा। पीछे–पीछे माँ आ रही थी। तार ज्यादा घने न थे। उसे उम्मीद थी कि एक हाथसे तार उठा कर वह आसानी से इनके बीच से निकल जाएगी। उसने एक हाथ की पत्तियों को दूसरे हाथ के हवाले किया। कुछ पत्तियाँ नीचे गिर गयी, जिसे उसने फिर से उठा दूसरे हाथ में अच्छी तरह बंद किया। वह एक भी पत्ती खोना नहीं चाहती थी। एक–एक पत्ती कीमती थी।

जैसे ही सोमरी ने खाली की गई हाथ से तार हटाना चाहा, सारे शरीर में बिजली सी दौड़ गई। उसका पूरा शरीर कांपने लगा। चीख उसके हलकों में अटक गई। उसके पैर जमीन की गीली मिट्टी से चिपक गए। वह चाहकर भी एक कदम आगे बढ़ा न सकी। उसकी आंखें बाहर निकलने लगी और वह लड़खड़ा कर तारों के बीच गिर गई। बुधिया ने जब बेटी को इस प्रकार गिरते देखा तो उसकी चीखें निकल आयीं। उसे कुछ समझ न आया कि आखिर यह हुआ क्या? उसे स्वप्न में भी यह उम्मीद न रही होगी कि इन तारों में बिजली प्रवाहित हो रही थी, जिसे शायद मालिक ने जानबूझ कर लगाया था, ताकि चोरों से सामान की रक्षा हो सके। पर यह तो सरियों की चोरी रोकने के लिए था, न कि सब्जियों की। उसे इस बात की तनिक भी आशंका न रही होगी कि उसके इस कदम का अंजाम इतना भयावह होगा।

बुधनी इन सब बातों से अंजान सोमरी की मदद को दौड़ी। उसे लगा कंटीली तारों ने सोमरी को बींध दिया है। ईश्वर उसकी चोरी पर कुपित हैं। वह दौड़ कर बेटी के पास पहुंची। तारों में लिपटे उसके शरीर को जैसे ही उसने छुड़ाना चाहा, अपने शरीर में बिजली दौड़ गई। बेटी के समान ही उसकी पहले आँखें बाहर आई और फिर प्राण। और कुछ भी सोच विचार करने का समय न मिला। कुछ ही क्षणों में दोनों माँ–बेटी जमीन पर मृत पड़े थे। बुधनी के हाथों से टोकरी छूट चुकी थी। ईश्वर ने उसकी चोरी का भरपूर दंड दिया था। अब और चोरी करने की किसी भी प्रकार की संभावना न थी। परंतु सोमरी के ऊपर इस दंड का कोई प्रभाव न पड़ा। साग के लाल पत्ते अभी भी उसी मुट्ठी में इस प्रकार भली–भांति जकड़े हुए थे कि शायद एक भी गिरा न था।

पुत्र की वेदना

रामौतार प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय शाखा लखनऊ, बिहार, पटना

एक पुत्र को जब जब अध्ययन के लिए अपने शहर से दूर जाना होता है तो एक दो दिन पूर्व से ही घर का माहौल में गज़ब सा सन्नाटा और शांति छा जाती है। सभी के सभी पुत्र से इतना प्यार करते, मानों अब पुत्र लौटेगा नहीं और माता–पिता छोड़ वहीं बस जाएगा। पापा तो कुछ नहीं बोलते। चुपचाप पुत्र के पसंद और जरूरत के सामान ला लाकर माँ को देते और हिदायत करते कि इसे रखना, भूलना मत। वे अंदर ही अंदर टूटते रहते। जब कभी पुत्र, पिता के पास जाता तो थोड़े शब्दों में पिता कुछ पूछते और हट जाते जबकि बेटा बारंबार समीप रहकर उनकी वेदना को कम करने की कोशिया में लगा रहता।

अध्ययन स्थल जाने के लिए स्टेशन का माहौल गज़ब वेदनायुग्त रहता और पहुंचने पर पुत्र की मनोदशा भी कुछ दिनों तक गम भरा रहता है। वहीं पुत्र, कुछ शब्दों में अपनी अभिव्यक्ति इस प्रकार प्रकट करता है –

'माँ' विशेष होती है बच्चों के लिए
सारा ख्याल रखती अपने नौनिहाल बेटों के लिए
पापा भी करते हैं सब कुछ बेटे–बेटियों के लिए
उनका किया हुआ पता नहीं चलता,
क्या किये हम सबके लिए
इसलिए पुत्र कहता .....

पापा अगाध मौन रहकर किया न करो
पापा अपना सबकुछ बच्चों पर जाया न करो

देखा है मैंने आपको
अकेले में आंसू पोंछते हुए
पाया हूं मैं, चिंता में आपको
रात भर जागते हुए
भेजना रहता है मुझे
कॉलेज जब–जब
आपको देखा है
सदा परेशान तब–तब
विदा करते मुझे अपनी
पल–पल इतना फिक्र पापा किया न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

पहुंचते ही कर देना एक फ़ोन
कब आना होगा अब, धीरे से कहना
और हो जाना मौन
पता नहीं क्या सोचते आप
नहीं जानता कौन
रह रहकर मुझे देखना

हो जाना अपने में गौण
उदासी में सर पर हाथ फिराया न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

मैं भी नजरें वहां पर नहीं मिला पाता हूं
उदास चेहरा आपका, देख उदास हो जाता हूं
गमगीन हो यूं ही हाथ हिलाया करता हूं
सच में कहूं मैं भी चेहरा देख नहीं पाता हूं

मेरा आगा–पीछा सोच,
अपना कलेजा दुखाया न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

जब पहुंच जाता हूं अपने गंतव्य पर
फोन आता आपका तुरंत स्टेशन पर
लो बात करो, फोन आप मां को थमा देते
पीछे से मां को कई बात पूछने के लिए कहते
फीकी मुस्कान से मुस्कराया न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

घर में लाइट्स बुझाते चलते आप
सोचकर भी अपने लिए
सामान नहीं खरीद पाते आप
प्रबंध करते राशि का
मेरे लिए सर्वदा आप
मुझे कोई कमी न हो
सदा पूछा करते आप

जाते समय ATM मुझे थमाया न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

पानी का बोतल रखा या नहीं
टिकट/परिचय–पत्र रखना भुला तो नहीं
पर्स में खुले पैसे रखे या नहीं
इतनी चिंता मेरे लिए किया न करो

इतना परेशान आप हुआ न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

बर्थ के नीचे बैग रख जाते
ध्यान रखेंगे, अकेला जा रहा
साथ के यात्री को अनुरोध करते जाते
दौड़कर फिर पानी के एक और
बोतल खरीद के ले आते

पापा मेरे लिए चिंता न किया करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो

हॉस्टल/पीजी पहुंचने पर मै भी
सोचता रहता हूं आपके लिए
क्यूं चिंतित रहा करते आप
सर्वदा मेरे लिए
दो तीन दिनों तक नहीं भूल पाता
स्टेशन का वो दुखदाई मंज़र
रह–रहकर आपकी वो बेचैनी
रूला देता रहता मुझको अंदर ही अंदर

पापा अपनी सेहत का भी ख्याल किया करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो
मेरी भावनाओं/वेदना को भी आप समझा करो
पापा मुझे स्टेशन छोड़ने आया न करो।

राजा का तर्कसंगत निर्णय

उदय शंकर दूबे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, मध्य रेल
नवीन प्रशासनिक भवन, मुम्बई–400001

हिमवान राजा बड़े ही नेक एवं यशस्वी राजा थे। वे पूरे राज्य में अपनी कार्य कुशलता एवं सुदृढ़ प्रशासन के लिए जाने जाते थे। उनकी न्याय प्रणाली भी अत्यंत लोकप्रिय थी। वहां की जनता उन्हें भगवान की तरह मानती थी। उनके दो पुत्र भी थे, जो बहुत ही कुशल योद्धा एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। इस प्रकार पूरे राजपरिवार की महिमा का गुणगान उनके साम्राज्य में उनकी जनता द्वारा किया जा रहा था।

हालांकि सब कुछ सही चल रहा था परन्तु राजा को अपनी बढ़ती आयु के साथ राज्य के लोगों की चिंता सताने लगी कि उनके बाद उनकी जनता का ध्यान कौन रखेगा। इसलिए उन्होंने अपना उत्तराधिकारी की खोज शुरू कर दी। इसके लिए उन्होंने राजसभा में अपने सभी मंत्रियों को बुलाने की घोषणा की, साथ ही उन्होंने अपनी रानी को भी दरबार में बुलाने के लिए संदेश भिजवा दिया। वे चाहते थे कि जो भी निर्णय हो उसमें सभी मंत्रियों सहित, पत्नी एवं जनता की भी सहभागिता हो ताकि किसी भी निर्णय पर पहुंचने से पहले सभी के हितों का ध्यान रखा जा सके।

अतः निर्धारित किए गए दिन को राजा के दरबार में सभी इकट्ठा हुए। दरबार की कार्यवाही शरू हुई। राजा ने मंत्री परिषद के समक्ष अपने प्रस्ताव को रखा जिसमें उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव हेतु समस्त दरबार की राय जानने की इच्छा प्रकट की। सम्पूर्ण मंत्री परिषद इस बात से सहमत था कि उनके पुत्रों में से ही किसी एक को भावी राजा बनाया जाए। क्योंकि उनके दोनों ही पुत्रों में कुशल प्रशासक होने के सारे गुण विद्यमान हैं। परन्तु रानी चाहती थी कि उनके ज्येष्ठ पुत्र को ही भावी राजा बनाया जाए जो सम–सामयिक परंपरा भी थी। इससे एक असमंजस की स्थिति पैदा हो गई और राजा ने निश्चय किया कि यदि जनता की यही राय है तो हमारे दोनों पुत्रों में से जो भी अधिक योग्य होगा उसे ही उनका उत्तराधिकारी बनाया जायेगा।

अब यह निर्णरू मंत्री परिषद पर छोड़ दिया गया कि उनके दोनों पुत्रों में किस प्रकार की परीक्षा ली जाए एवं उनके नियम क्या हों। इस कार्य को मंत्री परिषद ने बहुत गंभीरता से लिया और इस पर मंथन शुरू हुआ। मंत्री परिषद का निर्णय राजा को बताया गया। इसके बाद राजा ने दोनों पुत्रों को बुलाया और उनकी योग्यता को

परखने हेतु उनको आदेश सुनाया। राजा ने दोनों पुत्रों को एक–एक तलवार दी और दोनों को दो दिशाओं में जाने का निर्देश दिया, साथ ही यह भी कहा कि आप दोनों इस प्रकार के कार्य में लग जाएं जो राज्य की समृद्धि में सहायक हो। इस कार्य को करने के लिए उन्हें एक सप्ताह की अवधि प्रदान की गई।

इस प्रकार से राजा के आदेशा–नुसार दोनों पुत्रों ने विभिन्न दिशाओं में अपने कार्य हेतु सर्वप्रथम अपने लिए सेना की दो टुकड़ियों का गठन किया एवं देशाटन के लिए प्रस्थान कर गए। ज्येष्ठ पुत्र युद्ध कौशल में निपुण था, अतः उसने पड़ोसी राज्य पर आक्रमण कर दिया एवं उस राज्य के राजा की हत्या कर उनका शीष निर्धारित समय सीमा के अंदर अपने पिता के चरणों में प्रस्तुत कर दिया। दूसरी ओर उनके कनिष्ठ पुत्र ने पूरे राज्य की जनता के कष्ट एवं उनकी शिकायतों को जानने एवं उनके समाधान हेतु राज्य की जनता के बीच समय व्यतीत किया। तत्पश्चात पड़ोसी राज्यों के राजाओं से मुलाकात कर अपने राज्य से उनके संबंधों को प्रगाढ़ बनाने की दिशा में सकारात्मक वार्ता एवं राज्य को कुशलता पूर्वक चलाने हेतु अनुभव प्राप्त किया एवं निर्धारित अवधि में राजा के समक्ष उपस्थित हुए और पूरे घटनाक्रम का वर्णन राजा के समक्ष प्रस्तुत किया।

उपरोक्त घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए राजा ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव हेतु पुनः मंत्री परिषद की बैठक बुलाई। राजा ने दोनों पुत्रों द्वारा निर्धारित अवधि में किए गए कार्यों को मंत्री परिषद के समक्ष रखा एवं उनसे इस पर सुझाव माँगा। सभी मंत्री दोनों के कौशल एवं पराक्रम से अभिभूत थे, परन्तु कनिष्ठ पुत्र के द्वारा की गई पहल से बहुत प्रभावित हुए एवं उसकी दूरदर्शी सोच की प्रशंसा करने लगे परन्तु उत्तराधिकारी के संबंध में निर्णय का कार्य राजा पर छोड़ दिया। राजा ने दोनों पुत्रों के कार्यों की प्रशंसा की परन्तु अपने कनिष्ठ पुत्र की बुद्धि एवं दूरदर्शिता से काफी प्रभावित होने के कारण उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने की घोषण की। इस निर्णय से अभिभूत होकर सभा में उपस्थित मंत्री एवं जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ राजा के निर्णय का स्वागत किया एवं सब उनकी बुद्धिमता की भूरी–भूरी प्रशंसा करने लगे।

माँ तुझे सलाम

सुश्री लिपिका दास
सहायक लेखा अधिकारी निधि-II
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता–700001

"जननी जनभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

माँ एक ऐसा शब्द है जिसके अंदर एक स्नेह, ममता और प्यार भरी मूर्ति खड़ी है। माता का पर्यायवाची है माँ। माँ का प्यार अपरिसीम होता है। निःस्वार्थ रूप से माँ अपनी प्यार की झोली फैलाये रखती है। वह अपने संतान को अपने खून से सींचती है। सिर्फ स्नेह या ममता ही नहीं माँ बहुत कर्तव्यपरायण भी होती है। अपने दायित्व को निभाते हुए कभी कोई समझौता नहीं करती। लेकिन क्या हम, जो माँ की संतान है वे माँ के इस बलिदान को उचित सम्मान दे सकते हैं? अक्सर देखा जाता है कि बच्चे बड़े होकर माँ को वृद्धाश्रम में भेजकर या खुद एक रंगीन दुनिया में रहकर खुश होते हैं। ऐसी ही एक कहानी है जहां मिसेज सत्यवती को अपने स्नेह और ममता की कीमत चुकानी पड़ी।

मिसेस सत्यवती एक सुशील और सुंदर महिला थी। पढ़ी लिखी भी थी। बहुत अच्छी सितारवादक भी थी। 22 साल की उम्र में उनकी शादी एक व्यापारी से हुई। वे दोनों बहुत खुश थे। एक साल के बाद उन्होंने अपने बेटे सुशील को जन्म दिया। समय बीतता गया और उनका बेटा सुशील भी बड़ा होने लगा। सत्यवती का पति बड़ा ही बदमिजाज स्वभाव का था। चूंकि सत्यवती बहुत सुंदर थी, वह हमेशा अपनी पत्नी को संदेह की नज़र से देखता था। उसका सितारवादन भी बंद करा दिया ताकि बाहर किसी से भी संपर्क न रख पाए।

लेकिन सत्यवती ने सब कुछ चुपचाप मान लिया। वह अपने पति को बड़ी श्रद्धा की नज़र से देखती थी। उसका ध्यान केवल इस बात पर था कि कैसे अपने बेटे को अच्छी तरह से शिक्षा देकर बड़ा करे। वह अपने बेटे को हर तरह की खुशियाँ देना चाहती थी। उनका सपना था कि एक दिन उनका बेटा बड़ा होकर देश का एक अच्छा नागरिक बने। आखिर वो एक माँ थी।

इधर सत्यवती के पति के व्यापार में घाटा बढ़ने लगा। चारों ओर से कर्ज़ के मारे वह दबा हुआ था। उसका स्वभाव भी बदलने लगा। वह रोज शराब पीने लगा और घर लौटकर किसी भी बात पर सत्यवती को पीटने भी लगा। फिर भी वह चुपचाप सहती रही, इस आशा में कि एक दिन उसका बेटा बड़ा होकर एक अच्छा आदमी बनेगा और उसका सारा दुख दूर कर पाएगा। वह दिन–रात कपड़े सिलने लगी क्योंकि बेटे को बड़ा जो करना था। फिर एक दिन स्कूल की फीस भरने के लिए अपने पति से पैसे मांगने गई तो उसने

पैसे देने से साफ इंकार कर दिया और कहा कि क्यों न बेटा पढ़ाई छोड़कर किसी काम में लग जाये और पैसे कमाए। यह उसके बेटे के दसवीं कक्षा की अंतिम परीक्षा थी। तब सत्यवती ने अपने प्राण से प्यारे सितार को बेच दिया और उन पैसों से बेटे के स्कूल की फीस भर दी। कुछ ही दिनों में उन लोगों को अपना मकान बेचकर कर्ज़ चुकाना पड़ा। फिर वे लोग किराए के मकान में रहने लगे। लेकिन सत्यवती अपने बेटे को एक ईमानदार तथा सज्जन व्यक्ति बनाने में लगी रही। चाहे उसे कितनी भी मेहनत करनी पड़े। इधर धीरे–धीरे सत्यवती का बेटा बी.ए. पास करके मास्टर्स भी कर लिया और उसे एक मल्टी नेशनल कंपनी में नौकरी मिल गई। नौकरी के दौरान उसे मिस सुनीता से प्यार हुआ और उसने शादी भी कर ली।

इधर सत्यवती के पतिदेव भी गुजर गए और सत्यवती अकेली अपने जीवनधारा को बहाने लगी। वह बड़ी ही मुश्किल से दिन गुजार रही थी। उनके पास न खाने के लिए अच्छा खाना, न ही पहनने के लिए अच्छे कपड़े थे। लेकिन उसे अपने बेटे पर पूरा भरोसा था कि वह बड़ा होकर अपनी माँ के दुख का बोझ हल्का करेगा। हाय अफसोस! उसका बेटा अब एक कीमती गाड़ी पर चढ़कर ऑफिस जाता है और एक आलीशान बंगले में रहता है, पर वहाँ माँ के लिए जगह कहाँ। इधर सत्यवती धीरे–धीरे उम्र से ज्यादा दिखने लगी थी और उसके सुंदर चेहरे पर काफी झुर्रियाँ पड़ गई थी। वह अकेले ही अपने घर में रहती थी। बड़ी ही मुश्किल से अपना दिन गुजारा करती थी। फिर भी हमेशा भगवान से प्रार्थना करती थी कि उनका बेटा सही सलामत रहे और एक अच्छा आदमी बने। यही है एक भारतीय नारी का परिचय। लेकिन भारतीय संस्कृति क्या इतनी कमजोर है कि हम स्वार्थी बन जाएँ? अपनी भलाई के अलावा किसी और की सुध भी न लें? क्या यही परंपरा चलती रहेगी कि हम बड़े होकर अपने बूढ़े माँ–बाप की ओर कोई ध्यान न रख पाएँ? क्या यही हमारी शिक्षा है कि अपने बुजुर्गों को उनका सम्मान देना भी बंद कर दें? कई प्रश्न उठते हैं समाज के उस वर्ग के लिए जो अपनी ही धुन में मस्त हैं।

इस कहानी में वर्णित माँ सत्यवती अपना खून सींच कर जिस बेटे को बड़ा करती है क्या उसका कर्तव्य और दायित्व इतना ही सीमित रहा कि अपनी माँ की ओर ध्यान न दे। जिस माता ने बेटे को इस दुनिया की रोशनी दिखाई, अपनी खुशी न्यौछावर कर अपने बेटे को खुश करने में लगी रही तो क्या यही था इस माँ का पुरस्कार?

माँ शब्द कितना भी छोटा हो लेकिन इसका अर्थ काफी व्यापक है। एक नन्हे–मुन्ने का पहला बोल है "माँ"। वह अपने कोख में पालकर हमें जन्म देती है। इसलिए माँ को जन्मभूमि और स्वर्ग से गरीयसी कहा गया है। माँ के लिए इतना ही कहना उचित है .....

माँ तुझे सलाम

अपने विषय में कुछ कहना पड़े तो बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि अपने दोष देखना आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरों का।

– महादेवी वर्मा

दर्द का रिश्ता

कुमार शर्मा 'अनिल'
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़–160020

"मुझे नहीं पता मुझसे गलती कहां हुई" – एक खूब गीली और अवरूद्ध फड़फड़ाहट मालती के होंठों पर कांप गई – "पिछले सात वर्षों में मुझे एक बार भी नहीं लगा कि अभिमन्यु को मुझसे कोई शिकायत है। वे एक बेहतरीन इंसान थे, इसीलिए मैंने अपना सब कुछ दांव पर लगाकर उनसे प्रेम विवाह किया। बचपन से चाहती थी उन्हें। सोलह वर्ष की उम्र में मन की जमीन बहुत कच्ची और उर्वर होती है। उस उम्र में लगाये गए प्रेम के पौधे बहुत तेजी और मजबूती से अपनी जड़ें दिल में जमा लेते हैं। अब वो कहते हैं, इस प्रेम के पौधे को जो अब एक वट–वृक्ष बन चुका है, अपनी दिल की जमीन से उखाड़ फेंकू। पर कैसे रजनी...? ... कैसे? वो कहते हैं सिर्फ मेरे प्यार के जुनून को देखते हुए उन्होंने मुझसे शादी की। अब उनके प्यार के जुनून को देखते मैं उनके प्यार का सम्मान करूं ... उन्हें तलाक देकर मुक्त कर दूं। जिससे वे तुमसे शादी कर सकें। मैं उनके प्यार का सम्मान तो कर सकती हूं ... पर उनके साथ के बिना नहीं रह सकती। कैसे बताऊं रजनी कि मुझे उनकी 'एडिक्शन' हो चुकी है, आदत पड़ चुकी है मुझे उनकी। मेरे दिल दिमाग, पूरे वजूद पर हावी रहता है उनका व्यक्तित्व। उनकी तरह सोचने, बोलने, व्यवहार करने लगी हूं मैं। मेरी आदतें अभिमन्यु जैसी हो गई हैं। बिल्कुल अभिमन्युमय हो चुकी हूं मैं। विश्वास नहीं करोगी तुम रजनी ... जब मुझे पता चला कि वे अपनी कम्पनी में ही कार्यरत किसी 'एग्जीक्यूटिव' से यानि तुम्हारे साथ अफेयर में हैं तो मुझे बिल्कुल बुरा नहीं लगा। अभिमन्यु पर इतना विश्वास करती थी मैं कि उनके और तुम्हारे रिश्ते को मैं कोई महत्व दे ही नहीं पाई ... न मुझे उनके इस अफेयर से कोई डर लगा। अब भी रजनी, मुझे न तो तुमसे कोई ईर्ष्या हो रही है, तुम इसे समझ ही नहीं पाओगी, कोई नहीं समझ पायेगा ... दरअसल अभिमन्यु की किसी बात से, आदत से, रिश्ते से, उनसे जुड़े किसी व्यक्ति से मैं नफरत कर ही नहीं सकती" – कुछ पल के लिए मालती रूकी – "तुम समझ रही हो न मुझे?"

रजनी ने एक हल्की सी मुस्कुराहट के साथ बिना उत्तर दिए पानी का गिलास उसके आगे कर दिया। मालती रजनी की मुस्कुराहट के अर्थ तलाशने लगी – "मैं समझा ही नहीं पाऊंगी तुम्हें रजनी। हर

व्यक्ति को लगता है कि उसका प्रेम ही सबसे ज्यादा महान है और हम कभी किसी दूसरे के प्रेम का सम्मान कर ही नहीं पाते। अब देखो न, मैं इतनी देर से केवल अभिमन्यु के प्रति अपने प्रेम को ही स्थापित करने में लगी हूं। यह जानने की न तो मैंने चेष्टा की, और अब भी न यह जानने की मेरी इच्छा है कि तुम अभिमन्यु से कितना प्यार करती हो। तीन माह पहले जब अभिमन्यु ने मुझे बताया कि वो मुझसे आपसी सहमती से तलाक चाहते हैं ... तब से बहुत रोई, गिड़गिड़ाई हूं उनके सामने। ... उन्हें अपना निर्णय बदलने के लिए जितने प्रयास कर सकती थी, कर चुकी हूं। मुझे यह भी नहीं पता मैं तुम्हारे पास क्यों आई हूं। शायद तुम्हें देखने, मिलने, शायद तुम्हें यह बताने कि मैं अभिमन्यु से कितना प्यार करती हूं या कहीं मन में यह भी हो सकता है कि एक अंतिम प्रयास कर लूं ... तुमसे प्रार्थना कर कि मेरे अभिमन्यु को मुझसे मत छीनो या ये सारे कारण एक साथ भी हो सकते हैं। एक पल के लिए वह रूकी – "अच्छा, अब मैं चलूंगी। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे सामने मेरे आंसू निकलें।"

रजनी दरवाजे तक मालती को छोड़ने आई तो बाहर निकलती मालती की हथेलियों को उसने प्यार से अपनी हथेलियों में दबा लिया। संवेदना का तप्त स्पर्श पाकर आंखों से आंसुओं का सैलाब अपनी सीमाओं को तोड़कर बह निकला। मालती फफक–फफक कर रो दी – "मेरे अभिमन्यु को मुझसे मत छीनो।"

रजनी ने बड़े प्यार से मालती के आंसू अपने दुपट्टे से पोंछ दिए – "अभिमन्यु बहुत प्यारे इंसान हैं, बहुत प्यार करती हूं मैं उन्हें। ... और आपको तो ये भी पता है कि अभिमन्यु जैसे इंसान से खुद को अलग करना किसी के लिए भी कितना मुश्किल है। आप निश्चिंत होकर घर जाइये। अभिमन्यु आपके ही रहेंगे। मुझसे अब अभिमन्यु का कोई रिश्ता नहीं रहेगा। आपसे भी शायद अब कभी नहीं मिलूंगी पर मेरा एक गहरा रिश्ता है आपसे ... दर्द का रिश्ता। मैं भी कभी किसी लड़की के सामने इसी तरह गिड़गिड़ाई थी। अपने पति के लिए ...। हां तलाकशुदा हूं मैं। आपके जितना ही प्यार करती थी मैं भी अपने पति से। पर हर लड़की 'रजनी' नहीं होती। अच्छा बाय। मैं भी नहीं चाहती कि तुम्हारे सामने मेरे आंसू निकलें।"

रजनी ने धीरे से मालती के चेहरे के सामने ही दरवाजा बंद कर लिया और फफक–फफक कर रो दी।

दुआएँ रंग लाएँगी

श्रीमती शुभा कुमार, आई.ए.ए.एस
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

शिद्दत से माँगी ये दुआएँ रंग लाएँगी
वक्त ज़रा और है, फिज़ाएँ मुस्कुराएँगी
फिर होगा वही उजाला, खुशनुमा आलम
दिल को है यकीन बहारें लौट आएँगी।

था कठिन ये वक्त किन्तु हौसले में दम
यारों के दर्दों अश्क तले जी रहे थे हम
या यू कहे कि जीते जी मर रहे थे हम,
इस इन्तज़ार में कि बहारें फिर से आएँगी।

हर लम्हा दुआ बने, दिल में यही चाह
सहर हो करीब जिसमें बन्दगी बेपनाह
इन्सानियत के आगे कुदरत रहम खाएगी
दिल को है यकीन बहारें जल्द आएँगी।

श्रीनगर...

सुश्री इला सिंह, आई.ए.ए.एस.
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

एक ख्वाब या हकीकत
जहां पलक झपकते ही
मौसम भरे फिजा में रंग अनमोल
देखो कैसे श्वेत हुआ गुलाबी
हरा फिर सुनेहला!!
यही मचलते टहलते बादल
खेले आँख मीचौली हरदम
छिपाये शांत शिखर के रहस्य
फैलाये फूलों की मनमोहक सुगंध
और 'दल' रखे पूरे आवाम को व्यस्थ...
क्या यह सच है या मात्र एक वहम्
इसी उधेड बुन में उभरते मनोरंजक प्रश्न
देखो याद आया ना वो प्रसंग
"गर फिरदौस बर रुये ज़मी अस्त
हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त"
आओ इन वादियों के निवासी
ठहरो, बैठो, जानो, देखो, समझो, पहचानो
क्यो हो इतने खफा अपने 'आप' से यूही
क्यों है ये उदासी छाई यहां
इस जन्नत पर हरदम...
आओ इक बार फिर से हज़रत बल को जाने
और शंकराचार्य से पाये...
वो सम्मान वो ज्ञान वो स्नेह वो मान
जिसकी खुशबू में झूम उठे
आने वाली पीढ़ियों की खुशियां और सम्मान!!!

धुआं

सुश्री रश्मि अग्रवाल
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा
महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौसेना)
नई दिल्ली

फिज़ा में हर तरफ़ है छाया धुआं धुआं,
जैसे जहाँ के गिर्द हो लिपटा हुआ धुआं,
कुछ सूझता नहीं है आगे लिखा है क्या,
राहों में और आँखों में, बिखा हुआ धुआं।

घुलता ही जा रहा है हवाओं में यूँ ज़हर,
चुपके से जा बसा है हर जिस्म में धुआं,
सांसे खरीदी जा रही हैं महंगे दामों में,
हाँ मोल मुफ्त सांस का, समझा रहा धुआं।

इन्सान की बेहिसी से, आया है मोड़ ये,
चूल्हों में न सिमट सका, हरसू गया धुआं,
इक दौड़ सी है जैसे, और जीत का जुनून,
कुदरत को राख कर चला, तोहफा मिला धुआं।

‘आज’ कल के लिए

सुश्री रूप राशि
वस्त्र आयुक्त
वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

क्यूँकि कौन किसे कब कैसे
किसकी कहानी याद करता है?

बस जियो तो ऐसे
कि कल
जब
कभी कोई
भूले भटके
नाम का ज़िक्र करे
तो एक इत्र का
एहसास
फ़िज़ा में छिटक सा जाए
औ’
शायद
किन्हीं आँखों की कोरें
नमी से
बोझिल सी हो जाएँ!

नया विहान

सुश्री सुमेधा अमर
निदेशक, कार्या. महानिदेशक लेखापरीक्षा
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग
नई दिल्ली–110002

आज़ादी क्या मिली हमें,
हम अपनों को ही भूल गए,
जंगे–आज़ादी में दी,
उनकी कुर्बानी भूल गए।

वह वहशती वलवले,
वह सरफरोशी की तमन्ना,
क्रांतिकारी हों या गांधी,
सबकी राहें भूल गए।

देश को, झण्डे को, भारत माँ को,
और उनकी शान में खाई
कसमें – वादे भूल गए,
नई सुबह, नई आशा, नया सूरज,
सभी को हमने खुदगर्जी में डुबो दिया,
यह कैसी आज़ादी मिली,
जिसने वतन भुला दिया।

यह मेरी जाति, मेरी भाषा, मेरा प्रांत,
इसी में खुद को रमा दिया,
और मेरा देश, मेरे प्राण,
बेखुदी में उनको डुबो दिया।

क्या, इस अंधेरी रात का,
नया विहान आएगा?
मतिभ्रम को जो मिटाएगा,
और विवेक को जो जगाएगा,
जब अपने आँसू से ज्यादा,
गैरों के आँसू पोछेंगे।

जब अपने छालों से ज्यादा,
औरों के जख्म दुलराऐंगे,
जब शोषित, पीड़ित और दलित प्रेम,
शब्दों तक सीमित नहीं होगा।

जब कर्मों का नेतृत्व होगा,
और शब्द उसके दास होंगे,
जब ऐसा होगा मेरे भाई,
तब ही, नया विहान आएगा।

पर वह, जरूर आएगा,
पदचाप उसकी सुन रही,
वह पास ही तो आ रही,
और कह रही है, आपसे, मुझसे,
कि मैं पास ही हूँ आ चुकी,
द्वार पर खड़ी हूँ मैं,
खिड़की से मैं हूँ झाँकती,
नए विहान के लिए खड़ी हूँ मैं।

उठो और साथ चल पड़ो,
कि राह अभी लंबी है,
और दूर हमें जाना है।
जहाँ हमारे भारत को
दुनिया का मुकुट बनाना है,
और अन्त्योदय के सपने को
पूरा करके दिखलाना है।

कोविड–19 की यादें

सुश्री प्रिया मिश्रा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)-I
महाराष्ट्र, मुम्बई

लॉकडाउन था तो मुश्किल समय, पर बन गया अपनी धरोहर,
हर पुराने शौक के लिए हम सबने समय खूब निकाला,
खून मन से यू–ट्यूब से नये व्यंजन सीख कर सबको खिलाया,
घरवालों ने 'अच्छा बना लेती हो!' तुम कहकर हमारा मनोबल बढ़ाया।
गायन–वादन भी कितने दिनों से हम गए थे भूल,
इस लॉकडाउन में पुरानी डायरी से फिर हट गई धूल,
शाम में गीत–संगीत से अपना मन बहलाया,
लॉकडाउन तुमने हर पल कुछ नया सिखाया।
कितना मुश्किल होता होगा स्कूल में शिक्षकों को कक्षाएँ लेना,
कुछ दिन ये भी कोशिश हुई – प्यारे 'ओम' को पढ़ाने की,
जरा सा डाँटने पर आँखें उसकी भर आती है,
जिसे देखकर प्रिया तुरंत पिघल जाती है।
याद आओगे तुम लॉकडाउन, याद आएंगी तुम्हारी कहानियाँ,
जिसने घर के हर सदस्य को जोड़ दिया कुछ पल के लिए,
किस्से, कहानियाँ, रामायण जिन्हें हम गए थे भूल,
सबके मन में खिला दिए जिसने अगणित सत्कर्मों के फूल।
लेकिन यह बस कम प्रतिशत की कहानी है,
जितना लॉकडाउन हमारे लिए सुहावना था,
बहुतों के लिए सजा भी था,
जो कभी लड़े, कभी हारे, पर हार कर भी डटे रहे।

दो कविताएं

सुश्री लीना दरियाल सत्यम
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय विभूति खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ–226010

(1)

कोई जरूर तो नहीं

हर बार कुछ लिखे, कोई जरूरी तो नहीं,
हर बार कुछ कहे, कोई जरूरी तो नहीं।

एहसासों की जमीं, कुछ यादों को बोना है,
आँखों की नमी मिले, कोई जरूरी तो नहीं।

आईने हैं कभी तो, धुंधले भी हो जाते हैं,
हर बार अक्स दिखे, कोई जरूरी तो नहीं।

कैनवस पर खींची, कुछ लकीरें ही तो हैं,
हर बार चेहरा खिले, कोई जरूरी तो नहीं।

सफ़र कब खत्म हुआ, राहें चलती ही रही,
हर बार मंजिल मिले, कोई जरूरी तो नहीं।

कुछ हमराह साथ थे, किसी मोड़ मुड़ गये,
हर कदम साथ चले, कोई जरूरी तो नहीं।

चेहरों की एक भीड़, वो एक हिस्सा ही था,
हर संग साथ में सजे, कोई जरूरी तो नहीं।

उदासियों को आने का, एक बहाना चाहिए,
'सत्यम' पल भर रोके, कोई जरूरी तो नहीं।

(2)

तन्हाई का मेला

कुछ हालात यूँ ही है, हर शहर इधर उधर,
कुछ अंदर बाहर यही है, ख़बर इधर उधर।

शाम ढले ये सांस, कुछ अटकी लग रही है,
कुछ बदले से हालात, है नज़र इधर उधर।

अभी तो खुशबू सी, महकी थी गुलशन में,
क्यों अब उदास सा, हर शज़र इधर उधर।

शाम को भी आज कुछ, ढलने की जल्दी है,
जाने किस इंतेज़ार में, हर बशर इधर उधर।

स्याह हुई रंगत, रात की तरफ़ बढ़ रहे कदम,
हर शख़्स के अंदर है, एक समर इधर उधर।

कोई भीड़ में अकेला, साथ तन्हाई का मेला,
'सत्यम' तलाश में हैं, सब मग़र इधर उधर।

मृत्यु के करीब

श्री करूणाकर साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)-II
पश्चिम बंगाल, कोलकाता–700064

कभी सुना ना कभी देखा भय का सन्नाटा छा गया
देखते ही लोग मरने लगे सारा जगत निशब्द हो गया
अद्भुत यह कोरोना वायरस, मृत्यु के करीब सबको ले आया।

रास्ता घाट और ऑफिस बाजार बंद हो गया लोगों का घर
यह नियम बनाया है सरकार मास्क सैनिटाइजर और दो गज की दूरी
जीवन बचाने के लिए यही संजीवनी जो है जरूरी।

सबके मन में यह संदेह है कहीं भी कोरोना छिपा हुआ है
जो खुद को द्रुत बदलता रहता है अगर वैक्सीन का उद्भावन हो गया
हम आशा करते हैं कि वह कोरोना को रोक पाएगा।

यह कहां से आया इसको किसने लाया पैदा होके फिर जगत में फैल गया
जो मानव जगत को ध्वस्त करने में निरंतर परीक्षण करता रहता है
कहीं ईश्वर की इच्छा यह तो नहीं कि उसको एक सबक सिखाएं

यह तो कुछ लोगों का अहंकार है जो मृत्यु को सब के पास ले आता है
लोगों को भी यह समझना है कोरोना हो या विश्वयुद्ध हो
रासायनिक हथियार या एटम बम या फिर शांति से जिंदगी जीना है।

उंगली पकड़कर पहुंचा पकड़ना

मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड 191 (एफ 2), सेक्टर–4, वैशाली
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश–201010

तब एक आप ही तो थे मेरे कैश्वर्य के
सुन्दरतम सलोने से जुबनाते सपने
अब आप ही हो हे प्रियातिप्रिय हर ऐश्वर्य–से बढ़कर
इस जोवना के जीवन में निकटतम अपने।

अब मैं जब कभी प्रथम मिलन से
मंगल मिलन और सांसारिक प्रचलन की
स्मृति पटल पर सुरक्षित उन पूर्वदीप्तियों में झांकती हूं
कतिपय बार अपने दिव्य दृष्टि पटल पर
अंकित उस अभिनीत नाटक के
हर अंक को सूक्ष्म दृष्टि से आंकती हूं।

तब मैंने जब किया था
एक लम्बा इन्तजार
एक दिन शुभमुहूर्त पर सज संवरकर जयमाला से किया था
मंच पर अपने उन साकार सपनों का स्वागत सत्कार
मुख मण्डल अपना हुआ लाल गुलाल था
हुआ कितना कमाल था
प्रियतम आपको यह जयमाला से सत्कार इतना भाया था

कि – उसी में मुझे समाहित समझ प्रफुलित होके उसे हिय से लगाया था
तब आपने भी प्रति–उपहार स्वरूप किया था तत्काल
अपने पवित्र प्रेम का इजहार
दिया था डार मेरे गले में वह सुरभित पुष्प हार
मैंने माना था तब उसे आपका एक बहुत बड़ा उपकार
पलकें झुकाकर बमुश्किल छिपाया था
वह तन वदन से मुख मण्डल तक अंग–अंग
एक सिहरन–संग प्रसरित अद्भुत उद्गार।

आपने जौहरी का शानदार अभिनय कर
पहनाई थी मेरी उंगली पकड़ कर मनभावन स्वर्ण मुद्रिका
बन गई थी मैं
इस धरा की चारू चंद्रिका।

आपने यज्ञ की वेदी में
अपने सचल ब्यूटी पार्लर में बिठाकर
किया था चुटकी भर सिंदूर से मेरा श्रृंगार
दिया था कजरा मेरे कुंवारे जुड़वां नैनों में डार
इसी को तो कहते हैं मंत्र फूंकना
आंखें में धूल झोंकना।

आपने ही हे बहुरूपिया पिया मन्यारी का सफल अभिनय कर
बिना तोल–मोल मेरा पहुंचा पकड़कर
पहनाई थी कांच की चूड़ियां इन गोरे–गोरे हाथों में
दिखाया था दर्पण
करके अपना सर्वस्व अर्पण
रिझाया था इस छबीली को अपनी
उन रसीली चिकनी–चुपड़ी रंगीली बातों में।

मैं स्वभाव से निपट भोली
घूंघट में थी नई नवेली
घूंघट के पट न खोली

खेलते–खेलते आंख मिचौली
न जाने कैसे आ गई थी उन जजबातों में
देकर अपनी उंगली संग पहुंचा
और – अपना हाथ भी तुम्हारे हाथों में।
इसी को कहते हैं उंगली पकड़ कर पहुंचा पकड़ना
फंसी चिड़िया को चारा चुगाके न्यारे से पिंजड़े में जकड़ना।

अब जाके जब मेरी समझ में आया
मैंने पाया
जानेजाना आप ही तो हो मेरे तीज त्यौहार
संग में मनभावन सोलह श्रृंगार
ओठों की लाली
कानों की बाली
नाक की मोती
नैनों की ज्योति
आप हो तो ही है मेरी चमचमाती माथे की बिंदिया
मैं निश्चिंत हूं संग में है मेरी निंदिया।

तब के बाद चुनाचे मैं लगातार
अब जब साल में एक बार सजती संवरती हूं
सोलह श्रृंगार कर चिरप्रतीक्षित
करवा चौथ का व्रत करती हूं
हम दोनों के मध्य
छलनी का पर्दा कर उमड़े प्यार के साथ
एक ही प्रत्याशा में आपकी ओर तकती हूं
जल ग्रहण कर केवल यही जानती हूं
होकर मंत्र मुग्ध पूर्णचन्द्र पर टकटकी लगा
आपकी लम्बी आयु की कामना करती
स्वयं को अखण्ड सौभाग्यवती मानती हूं।

नारी की महिमा

दया सागर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक मुख्यालय–2
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

नारी की महिमा अपरम्पार
नारी से ही है ये संसार
नारी का अगर साथ ना हो तो
जग में जीना हो दुश्वार
नारी का अस्तित्व है महान
नारी ही देती जीवनदान

नारी राधा नारी मीरा
नारी लक्ष्मीबाई भी है
शिवाजी जैसा वीर जना
नारी जीजाबाई भी है
राम कृष्ण गौतमबुद्ध
सब नारी की परछाई ही है
नारी से पहचान भी है

बड़ी अच्छी है व्यवस्था हमारी
बाहर नर और घर में नारी
बच्चों को देती संस्कार
कोमल, मधुर और जिम्मेदार
सुशिक्षित और समझदार नारी
बनाकर रखती घर संसार

नारी बेटी नारी बहना
नारी हीरा नारी सोना
नारी है घर का गहना
कौन चाहेगा इसको खोना
सभी सम्भालते, इसको ऐसे
जैसे कोई बहुमूल्य खजाना
नारी हमारा सम्मान भी है

सबसे पहला सबक सिखाती
नारी पहला गुरू भी है
थोड़े में भी पालन करती
नारी अन्नपूर्णा का रूप भी है
सुख दुःख में हाथ बटाती
ये नारी एक वरदान भी है

नारी भक्ति, नारी शक्ति
नारी से ही मिलती मुक्ति
सुशील नारी खुशियों का अम्बार
नारी के हैं रूप हजार
नारी की महिला अपरम्पार
नारी से ही है ये संसार
नारी में लाखों गुण है
नारी के कई आयाम भी है।

ग़ज़ल

सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

कहूँ मैं कैसे ऐ खुदा गुलाब सी है ज़िंदगी
क़दम–क़दम पे ख़ार हैं अज़ाब सी है ज़िंदगी

जवानियों के वास्ते शबाब सी है ज़िंदगी
मुझे सुरूर इश्क़ का शराब सी है ज़िंदगी

अमीर के लिए अगर नवाब सी है ज़िंदगी
ग़रीब कह रहा कि इंकलाब सी है ज़िंदगी

हर इक सफ़ा निसाब का उलझ गया है ज़ेहन में
कठिन–कठिन सवालों की किताब सी है ज़िंदगी

उधर ढली सियाह शब इधर है आश्कार शम्स
ये देख हो गया यक़ीं सवाब सी है ज़िंदगी

खिलें न गुल जो ख़ार में न हो दवा बुखार में
लगेगा फिर कि ख़ानुमाँ–ख़राब सी है ज़िंदगी

जो तिश्नगी थी प्यार की कभी बुझी न वो मेरी
सदा मुझे लगा यही सराब सी है ज़िंदगी

बू ग़ैर की है आजकल हसीन के वजूद में
कहूँ मैं किस जुबाँ से अब कि नाब सी है ज़िंदगी

न यार है न प्यार है युगों–युगों की प्यास है
पर आप कह रहे हो इंतिख़ाब सी है ज़िंदगी

इधर न भूख सोने दे उधर न कोई काम दे
मैं सोच भी सका न कि ख़राब सी है ज़िंदगी

न दर कोई न ख़ानुमाँ मगर कभी न ग़म किया
अमाँ खुदा की है तो फ़ैज़–याब सी है ज़िंदगी

मिला है जब से यार तू खिले गुलाब चार सू
तभी से लग रहा है आब–ओ–ताब सी है ज़िंदगी

मिले न होते तुम अगर हसीं न होती रहगुज़र
मैं जान ही न पाता लाजवाब सी है ज़िंदगी

अभी तो मैं ज़मीं पे हूँ कभी तो आसमाँ को छू
ये कह सकूँ कि मेरी कामयाब सी है ज़िंदगी

है आया यार रू–ब–रू हो गुलफिशानी चार सू
खिले जो उसका गुल सा रू तो शाब सी है ज़िंदगी

ये इश्क़ की कहानियाँ वो मेहरबाँ जवानियाँ
हक़ीक़तों से दूर हों तो ख़्वाब सी है ज़िंदगी

गुमान मत तू कर सनम हसीन गर तेरा बदन
है चार दिन की चाँदनी फिर आब सी है ज़िंदगी

जहाँ में हमने हर क़दम रखा है फूँक–फूँककर
ये कौन कह रहा है बे–हिसाब सी है ज़िंदगी

दुआ भी है दवा भी है कज़ा अगर बक़ा भी है
जो एक लफ्ज़ में कहूँ हबाब सी है ज़िंदगी

मेरी बूढ़ी नानी

सुश्री नीतू सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

आँखे धंस गई है वक्त की मार से
चेहरे पर झुर्रियों का जाल है
धुंधलाई नजरों से ढूंढती है
चेहरों को .....
मेरी बूढ़ी नानी

80 की उम्र में भी
वही वात्सल्य वही प्रेम
छलकता है उनके कांपते
हाथों की छुअन से
उंगलियों से टटोल कर,
पहचानती है
मेरी बूढ़ी नानी

बचपन की वो कहानियां
कुछ मनगढ़ंत कुछ वास्तविक
अक्सर रात को कान लगाकर
सुनते थे हम
परिलोक की कथाएं
राजा–रानी की गाथाएं
रीति रिवाजों–संस्कारों में मढ़े
किस्से सुनाती
मेरी बूढ़ी नानी

नानी का घर जो होता था
गर्मी की छुट्टियों का ठिकाना
खूब शरारत करना
नानी को थकाना
बेटा अगले बरस फिर आना
वापसी पर रो–रो कर
कहती थी
मेरी बूढ़ी नानी

कुछ याद नहीं रहता उन्हें अब
भूल जाने की आदत हो गई है
श्रवण शक्ति भी
साथ नहीं देती
फिर भी होठों को हिलाने से
सब समझ जाती है
मेरी बूढ़ी नानी

धूल जम गई है उनकी यादों पर
शुष्क आंखों में बची है
कई अनकही बातें
डरता है मन उनके बिछोड़ से
क्या हमें यूंही छोड़ जाएगी।
..... मेरी बूढ़ी नानी।

मैं माँ को मानता हूँ

अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

बचपन में माँ कहती थी
बिल्ली रास्ता काटे,
तो बुरा होता है
रूक जाना चाहिए ...

बचपन में माँ कहती थी
बिल्ली रास्ता काटे,
तो बुरा होता है
रूक जाना चाहिए ...

मैं आज भी रूक जाता हूँ
कोई बात है जो डरा
देती है मुझे ...

यकीन मानो,
मैं पुराने ख्याल वाला नहीं हूँ ...
मैं शगुन–अपशगुन को भी नहीं मानता ...

मैं माँ को मानता हूँ।
मैं माँ को मानता हूँ।

दही खाने की आदत मेरी
गयी नहीं आत तक ...
दही खाने की आदत मेरी
गयी नहीं आज तक ...

माँ कहती थी
घर से दही खाकर निकलो
तो शुभ होता है ...
मैं आज भी हर सुबह दही
खाकर निकलता हूँ ...
मैं शगुन–अपशगुन को भी नहीं मानता ...

मैं माँ को मानता हूँ।
मैं माँ को मानता हूँ।

आज भी मैं अँधेरा देखकर डर जाता हूँ,
भूत–प्रेत के किस्से खौफ पैदा करते हैं मुझमें,
जादू, टोने, टोटके पर मैं यकीन कर लेता हूँ।

बचपन में माँ कहती थी
कुछ होते हैं बुरी नज़र लगाने वाले,
कुछ होते हैं खुशियों में सताने वाले ...
यकीन मानों, मैं पुराने ख्याल वाला नहीं हूँ ...
मैं शगुन–अपशगुन को भी नहीं मानता ...

मैं माँ को मानता हूँ।
मैं माँ को मानता हूँ।

मैंने भगवान को भी नहीं देखा जमीं पर
मैंने अल्लाह को भी नहीं देखा
लोग कहते हैं,
नास्तिक हूँ मैं
मैं किसी भगवान को नहीं मानता

लेकिन माँ को मानता हूँ
मैं माँ को मानता हूँ।

कन्या भ्रूण हत्या

सुश्री आस्था गुप्ता
लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता–700001

माँ! अगर मैं हँसती, खेलती, रोती,
तो क्या तुझे मेरे होने से तकलीफ होती,
क्यों दिया तूने मेरे हत्यारों का साथ?
क्यों मेरी माँ ही बन गयी मेरी जल्लाद?
तेरे बेटे जैसी, मैं भी तो थी तेरी ही औलाद।

जन्म देने का वरदान प्राप्त है,
मार डालने का अभिशाप नहीं
कन्यादान करने का पुण्य प्राप्त है,
कन्या भ्रूण हत्या का पाप नहीं।

क्या जवाब दोगे उस नींद को,
जो जागने के पहले ही सुला दी गयी?
क्या जवाब दोगे उस किलकारी को,
जो हँसने से पहले ही रूला दी गयी?

क्या किसी ने मेरी दर्द भरी सिसकियाँ नहीं सुनी?
क्या किसी ने मेरे आँसू नहीं देखे,
जब मैंने अपनी ज़िंदगी खोयी थी?
गर देखा होता तो जान पाते,
आँखों से पानी नहीं, बल्कि
मैं खून के आँसू रोई थी।

ग़ज़ल

राम सिंगार चौहान
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
बिहार, पटना

तुम मेरे थे कभी, क्या तुम्हें याद है।
थे मेरी ज़िंदगी, क्या तुम्हें याद है।

पहरों करते थे बातें जहाँ बैठके।
तारों की रौशनी, क्या तुम्हें याद है।

पहले–पहले हुई थी, जो बातें कभी।
लफ्ज़ों की चाशनी, क्या तुम्हें याद है।

एक दूजे के दीदार के वास्ते।
करते थे बंदगी क्या तुम्हें याद है।

इस ज़माने की रस्मों से हम थे परे।
अपनी इक राह थी क्या तुम्हें याद है।

सबको तन की रही, सच कहूँ पर हमें।
प्यास मन की रही, क्या तुम्हें याद है।

मेरे ख़त के लिए, वो सहेली तेरी
थी जो क़ासिद बनी, क्या तुम्हें याद है।

एक हम एक तुम, छत का वो रतजगा
और थी चाँदनी, क्या तुम्हें याद है।

स्मृति-वितान

केदार नाथ प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (से.नि.)
जय महावीर कालोनी, संदल पुर
पोस्ट महेंद्रु, पटना–800006

तेरे ओठों पर होता था
मेरे अधरों का जब नर्तन,
तुम मंद–मंद मुस्काती थी,
मैं जोर–जोर हंस देता था।

एक दीप वहां जल जाता था,
छा जाता था उर्मिल प्रकाश।
उड़ते थे चन्दन के छिंटें,
सौरभ–सुषमा, प्रेमिल प्रभास।

खो जाती थीं तुम दूर कहीं,
बन अमलतास की एक कली।
हो जाते थे जब बंद नयन,
बिखरा देती मिसरी की डली।

जुही, गुलाब औ' मौलसिरी,
क्षण–क्षण में खिलते रहते थे।
तुसली, पीपल औ' बेलपत्र
हर क्षण मुस्काते रहते थे।

ग्रीवा से लेकर पायल तक,
स्वर्णिम विभास छा जाता था।
गुंजित होती थी जयवंती,
मन मालकौंस बन जाता था।

लगता था जैसे दूर कहीं,
वीणा बजती है रह–रह कर।
डालों पर बैठे कोयल की,
वंशी बजती है रह–रह कर।

तुम आह्लादित हो जाती थी,
जब कमल–पुष्प खिल जाते थे।
नयनों से झरता गंगाजल,
जब नयन–नयन मिल जाते थे।

सब कुछ ओझल हो जाता है,
उड़ जाते ओठों के पराग।
थिरकन के स्वर मुखरित रहते,
गूंजित रहता मधूरिम विहाग।

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124